



जितना समय हम किसी कार्य की चिन्ता में लगाते हैं। यदि उतना ही समय हम उस कार्य में लगाएँ। तो चिन्ता जैसी कोई चीज ही नहीं रह जाएगी।

- बेरयल फिजर

जिद...सच की

@Editor_SanjayS YouTube 4pm NEWS NETWORK

वर्ष: 12 अंक: 239 पृष्ठ: 8 लखनऊ, बुधवार 7 अक्टूबर, 2026

सुनिश्चाना को मिली महिला टीम... 7 बिहार में एक और चुनाव, लगा... 3 भाजपा ही सीईसी है, चुनाव... 2

राहुल के जलवे सरकार छटपटा रही मोदी सरकार

राहुल गांधी को रोकने के लिए कम पड़ते बैरिकेड

» ज्ञानेश कुमार का छत्तीसगढ़ दौरा रुक, उठते सवाल क्या उर रहे हैं चीफ इलेक्शन कमिशनर

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। राहुल गांधी के एक वार से विज्ञापन के जरिये बनी मोदी सरकार की इमेज धराशायी हो चुकी है। जंतर मंतर पर चल रहे धरना प्रदर्शन में राहुल गांधी के संघर्ष के बाद अब उनकी चर्चा जनता के बीच ठीक वैसे ही होने लगी है जैसी कभी पीएम मोदी की हुआ करती थी। राहुल गांधी नायक की तरह गरज रहे उनकी आम आदमी जैसी छवि उन्हें देश के दूसरे नेताओं से अलग बना रही है और जेन जी तो उनका दीवाना हो गया है। राहुल गांधी प्रियंका गांधी पर देर रात एफआईआर के बाद आज का दिन भी हंगामा भरा रहा और जंतर मंतर पर पुलिस और प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गयी।

सियासत में कई बार एक तस्वीर पूरी कहानी कह देती है दिल्ली की सड़कों पर राहुल गांधी की तस्वीर इस वक्त कुछ ऐसी ही कहानी लिख रही है। हाथ में तिरंगा सामने बैरिकेड पीछे जनता का हुजूम और चेहरे पर आक्रामक तेवर जो सीधे सत्ता के दरवाजे को हिला रहे हैं। राहुल गांधी इस वक्त संसद के भीतर बैठे नेता नहीं हैं वह सड़क पर उतर चुके वह नेता दिख रहे हैं जिसे रोकने के लिए बैरिकेड कम पड़ रहे हैं। कल तक सवाल था कि राहुल गांधी चुनाव आयोग तक पहुंच पाएंगे या नहीं आज सवाल उससे बड़ा है अगर राहुल नहीं स्के तो अगला पड़ाव क्या होगा। राहुल गांधी इंडिया गठबंधन के सांसदों और जनता के साथ चुनाव आयोग की तरफ बढ़े। पुलिस ने रास्ता रोका तो आंदोलन आकाशवाणी भवन के पास जा बैठा। राहुल और प्रियंका गांधी को हिरासत में लिया गया। राहुल बैरिकेड पर चढ़े तिरंगा लहराया और चुनावी व्यवस्था पर सीधे सवाल दागे। एक तरफ दिल्ली में राहुल गांधी का तेवर गरम है। दूसरी तरफ महाराष्ट्र से चुनाव आयोग के खिलाफ उठी आवाजें दिल्ली तक पहुंच चुकी हैं। मुंबई में चुनाव आयोग और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश

मोदी सरकार के लिए असली परेशानी क्या है?

दूसरों मुद्दों के साथ अब सरकार के लिए राहुल गांधी भी एक बड़ी परेशानी बनते दिखायी दे रहे हैं। मोदी सरकार की परेशानी तब और बढ़ जाती है जब राहुल का सवाल विपक्ष के दूसरे सवालों से जुड़ जाता है। महाराष्ट्र में विरोध दिल्ली में विरोध युवा समूहों की बगावत विपक्षी दलों का प्रदर्शन एसआईआर पर विवाद और सीईसी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग। इन सबके बीच राहुल गांधी आक्रामक तेवरों से हर कोई चौंका रहे हैं। क्योंकि अब विपक्ष का मुद्दा सोशल मीडिया सड़क और संसद तीनों जगह एक साथ दिखाई देने लगे हैं।



कुमार के खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं। महाराष्ट्र की राजनीति के बड़े चेहरे भी इस मुद्दे पर सड़क पर उतर चुके हैं। और इसी बीच खबर आती है कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का 7 और 8 अक्टूबर का छत्तीसगढ़ दौरा रद्द कर दिया गया है। आयोग की तरफ से वजह अपरिहार्य कारण बताये गये हैं लेकिन पता सबको है कि यह दौरे क्यों रद्द किये जा रहे हैं। इससे पूर्व भी सीईसी ज्ञानेश कुमार का यूपी के वाराणसी और मेरठ का दौरा निरस्त किया जा चुका है। निरस्त होते दौरे से सवाल पूछ जाने लगे हैं कि क्या ज्ञानेश कुमार जनता के बीच जाने से डर रहे हैं। क्योंकि ज्ञानेश कुमार पहले से ही विपक्ष के निशाने पर हैं और एसआईआर को लेकर जनता भी उनसे नाराज है संसद में कार्रवाई की चर्चाएं हो रही हैं और पूरा मामला सुप्रीम कोर्ट की दहलीज तक पहुंच चुका है। बदलते समीकरणों में मोदी सरकार के सामने सबसे बड़ा सवाल है कि क्या इस गुस्से को रोका जा सकता है क्योंकि राहुल गांधी फिलहाल रुकते हुए दिखाई नहीं दे रहे लेकिन ज्ञानेश कुमार का छत्तीसगढ़ दौरा जरूर रुक गया है।

मुंबई की आग दिल्ली में भी उठा धुआं

मुंबई में चुनाव आयोग के खिलाफ लगातार विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। 2 अक्टूबर को शिवाजी पार्क में बड़ी संख्या में लोग जुटे और ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की। युवाओं के नेतृत्व वाले कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन में बालीवुड की कई नामचीन हस्तियां शामिल हुईं। वहां सीजेपी नेताओं ने सरकार को सीधा ललकारा और ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे के बिना अपना प्रदर्शन वापस लेने से इंकार कर दिया। इसके बाद 4 अक्टूबर को उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे भी चुनाव आयोग के खिलाफ एक संयुक्त मार्च में साथ दिखाई दिये। उस प्रदर्शन की खास बात यह रही कि दोनों दलों ने अपने पार्टी झंडों के बजाय तिरंगे को प्राथमिकता दी। कल आकाशवाणी भवन में भी राहुल गांधी के साथ कांग्रेस का झंडा नहीं बल्कि तिरंगा था। यही अंदाज इस पूरी कप्तानी के नेतृत्व को बड़े फैसले पर प्रदर्शित कर रहा है। यानि कि यह आंदोलन किसी पार्टी किसी नेता या किसी विचारधारा से निकलकर देश का आंदोलन बन रहा है। और इसका मतलब साफ है कि पूरा मुद्दा महाराष्ट्र से दिल्ली तक एक आकार ले रहा है। और अब अगर मुंबई से उठी यह राजनीतिक ऊर्जा राहुल गांधी के आंदोलन से जुड़ती है तो तस्वीर और बड़ी हो सकती है। यही वह मोड़ है जहां से जंतर मंतर का नाम फिर बड़ा होने लगता है।

राहुल का एंग्री यंग मैन मोड ऑन



राहुल बैरिकेड पर चढ़े तिरंगा लहराया और चुनावी व्यवस्था पर सीधे सवाल दागे।

राहुल गांधी इस वक्त संसद के भीतर बैठे नेता नहीं हैं वह सड़क पर उतर चुके वह नेता दिख रहे हैं जिसे रोकने के लिए बैरिकेड कम पड़ रहे हैं।

राहुल गांधी का नया अवतार संसद की कुर्सी पर बैठा नेता नहीं है। इस वक्त वह सड़क वाले नेता हैं। बैरिकेड के ऊपर चढ़कर मोदी सरकार को ललकार रहे हैं और बता रहे हैं कि सरकार के बैरिकेड कम पड़ सकते हैं लेकिन राहुल गांधी का हौसला नहीं रुक सकता। वह पुलिस को चुनौती दे रहे हैं पुलिस के सामने सवाल उठा रहे हैं और वह हाथ में तिरंगा लेकर सिस्टम से भिड़ते नेता के तौर पर उभर कर सामने आ रहे हैं। इंडिया गठबंधन के सांसद चुनाव आयोग की तरफ बढ़े। मकसद साफ था मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ विरोध और एसआईआर को लेकर सवाल पुलिस ने रास्ता रोका रास्ता रोका गया तो राहुल रुके नहीं आकाशवाणी भवन के पास धरना शुरू हो गया। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को हिरासत में लिया गया। राहुल का बैरिकेड पर चढ़कर तिरंगा फहराना देखते ही देखते राजनीतिक तस्वीर का सबसे चर्चित फ्रेम बन गया। यानी राहुल ने साफ कर दिया कि इस लड़ाई को सिर्फ प्रेस कॉन्फ्रेंस की लड़ाई नहीं रहने देना है। अब सड़क पर लड़ाई होगी कल तक राहुल सवाल पूछ रहे थे आज जवाब मांग रहे हैं राहुल गांधी लंबे समय से चुनावी प्रक्रिया और वोटर लिस्ट को लेकर सवाल उठा रहे हैं लेकिन इस बार तेवर अलग हैं। विपक्ष का आरोप है कि एसआईआर के जरिए मतदाता सूची में बड़े बदलाव किए जा रहे हैं और इससे वोटर्स के अधिकार पर असर पड़ रहा है।



मुंबई की चिंगारी भी बस पहुंचने वाली है दिल्ली

भाजपा ही सीईसी, चुनाव आयुक्त का इस्तीफा एकलौता विकल्प : अखिलेश

» सपा प्रमुख बोले- हम देश के लिए लड़ते हैं, गिरफ्तारी से नहीं डरते

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने चुनाव आयोग के साथ भाजपा सरकार पर करारा वार किया है। अखिलेश यादव ने कहा कि जो देश की खातिर लड़ते हैं वो गिरफ्तारी से नहीं डरते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा ही सीईसी है। देश का एकमत है मुख्य चुनाव आयुक्त त्यागपत्र दें।

उन्होंने कहा कि वन-नेशन, वन-इलेक्शन की थोथी बात करने वालों का असली मंसूबा और चंडीगढ़ी चाल ये है कि एक बार में ही चुनाव कराकर सब निपटा दो, बार-बार घपला करने की जरूरत ही न पड़े। घपला-घोटाला जितनी कम बार होगा, पकड़े जाने की आशंका भी उतनी ही कम होगी। अखिलेश यादव ने कहा कि इन भाजपाइयों को कहना चाहिए वन करप्शन, वन इलेक्शन। मतलब अब केवल एक और बार ही चुनाव करवाने की



साजिश है, फिर कभी चुनाव होगा ही नहीं। बता दें मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ दिल्ली में इंडिया गठबंधन के नेताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। संसद

के मकर द्वार से निर्वाचन आयोग मुख्यालय की ओर निकाले गए मार्च को पुलिस ने बीच रास्ते में रोक दिया। इसके बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और

वोट चोरी के खिलाफ आंदोलन के साथ आप : अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने आरोप लगाया है कि केंद्र सरकार पर चुनावों में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के जरिए चुनाव जीतने का आरोप लगाया है। उन्होंने दावा किया कि असली मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटाकर और फर्जी मतदाताओं के नाम जोड़े जा रहे हैं। अरविंद केजरीवाल ने वोट चोरी के खिलाफ चल रहे आंदोलन में आप के समर्थन की बात कही है। केजरीवाल ने मंगलवार को गोवा में कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर देश एकजुट हो रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले कुछ वर्षों में भाजपा एसआईआर के माध्यम से असली मतदाताओं के वोट कटवाकर और फर्जी वोट जुड़ाकर चुनाव जीते हैं। केजरीवाल ने आरोप लगाया कि इस तरह की प्रक्रिया लोकतंत्र के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी वोट चोरी के खिलाफ चल रहे आंदोलन के साथ खड़ी है और ज्ञानेश कुमार को इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची और चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मुद्दे अब राष्ट्रीय स्तर पर उठाए जा रहे हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव समेत समाजवादी पार्टी के सभी सांसदों और विपक्ष के नेताओं को हिरासत में ले लिया।

भाजपा सरकार की उल्टी गिनती शुरू : शिवपाल



» बोले सपा नेता- चुनाव ईमानदारी से होने चाहिए

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कन्नौज। यूपी में विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी हलचल बढ़ी हुई है। हर नेता अपनी-अपनी पार्टी की जीत के दावे करते नजर आ रहे हैं। इसी कड़ी में समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय महासचिव एवं जसवंत नगर के विधायक शिवपाल सिंह यादव ने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार जाने वाली है। उन्होंने ये भी कहा कि 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में 'इंडिया' गठबंधन सरकार बनाएगा।

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और चुनाव में उसके संभावित चुनौती बनने के बारे में पूछे जाने पर शिवपाल यादव ने कहा कि पार्टी का राजनीतिक अस्तित्व समाप्त हो चुका है। उन्होंने दावा किया, बसपा टूट गई है। बीजेपी जो भी कहती है, बसपा वही करेगी। 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे के बारे में पूछे जाने पर यादव ने कहा कि इस पर निर्णय राष्ट्रीय नेतृत्व करेगा। यूपी के पूर्व मंत्री शिवपाल यादव ने कथित वोट चोरी से लेकर राम मंदिर में चढ़ावे में हुई गड़बड़ी को लेकर बीजेपी को घेरा। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी वोट की चोरी के साथ ही 'भगवान को चढ़ाए जाने वाले चढ़ावे की भी चोरी करती है।' निर्वाचन आयोग के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि लोग अब सड़कों पर हैं और मांग कर रहे हैं कि चुनाव निष्पक्ष रूप से कराए जाएं, उन्होंने कहा, चुनाव ईमानदारी से होने चाहिए। शिवपाल यादव मंगलवार दोपहर में कन्नौज पहुंचे। इस दौरान उनका जोरदार स्वागत किया गया। उन्होंने सपा नेता जय कुमार तिवारी बौवन के आवास पर आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में भी भाग लिया।

अब आकाश को निकालने की नौबत नहीं आएगी : मायावती

» बसपा प्रमुख बोलीं- अशोक सिद्धार्थ के संन्यास के बाद उसमें बदलाव की उम्मीद

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने आकाश आनंद को दोबारा पार्टी में शामिल करने और राष्ट्रीय संयोजक की जिम्मेदारी सौंपने के बाद मीडिया में चल रही खबरों पर सफाई दी है। मायावती ने कहा कि आकाश आनंद की पार्टी में वापसी को लेकर अधिकांश मीडिया में जिस तरह से खबरें प्रकाशित की जा रही हैं, उसमें पूरे घटनाक्रम की सही तस्वीर सामने नहीं आ रही है।

मायावती के मुताबिक, आकाश आनंद शादी से पहले से ही बसपा में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे और उस दौरान उनके खिलाफ पार्टी को कोई शिकायत नहीं मिली थी। उन्होंने कहा कि इसी वजह से उस समय उन्हें पार्टी से अलग करने की जरूरत नहीं पड़ी। मायावती ने आकाश आनंद के ससुर



अशोक सिद्धार्थ का जिक्र करते हुए कहा कि उनके साथ रिश्ता होने के बाद ऐसी परिस्थितियां बनीं, जिनमें आकाश आनंद के राजनीतिक आचरण में सुधार के उद्देश्य से संगठनात्मक स्तर पर कई फैसले लेने पड़े। उन्होंने कहा कि गलती का एहसास होने के बाद आकाश को दोबारा जिम्मेदारी भी दी गई। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, आकाश आनंद को मई 2024 और मार्च 2025 में पार्टी से निकालने के बाद वापस लिया गया था। सितंबर 2026 में उन्हें फिर पार्टी से अलग किया गया और अब पांच अक्टूबर को मायावती ने उन्हें दोबारा पार्टी में शामिल करते हुए राष्ट्रीय संयोजक बनाया है।

सीईसी की नियुक्ति में पीएम, एलओपी के साथ सीजेआई भी हों शामिल : ओवैसी

» एआईएमआईएम प्रमुख ने मौजूदा चयन प्रक्रिया पर उठाए सवाल

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) की नियुक्ति करने वाले पैलन में भारत के मुख्य न्यायाधीश सीजेआई को शामिल करने की अपनी मांग दोहराई और मौजूदा चयन प्रक्रिया को सबसे बड़ी समस्या बताया।

मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त (नियुक्ति, सेवा की शर्तें और कार्यकाल) अधिनियम, 2023 के तहत, चयन समिति में प्रधानमंत्री अध्यक्ष के तौर पर, लोकसभा में विपक्ष के नेता और प्रधानमंत्री द्वारा नामित केंद्रीय कैबिनेट मंत्री शामिल होते हैं। हैदराबाद में पत्रकारों से बात करते हुए ओवैसी ने कहा कि उन्होंने दिल्ली में सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ इंडिया लॉक के विरोध प्रदर्शन में हिस्सा नहीं लिया



क्योंकि इंडिया इस गठबंधन का हिस्सा नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं वहां नहीं गया क्योंकि मैं उस (गठबंधन) का हिस्सा नहीं हूँ। बेगानी शादी में मेरा क्या काम? मुख्य चुनाव आयुक्त को चुनने की प्रक्रिया गलत है। यह पूरी तरह से एंजीक्यूटिव के पक्ष में है। इस प्रक्रिया को बदलने की जरूरत है। मुख्य चुनाव आयुक्त का चयन सबसे बड़ी समस्या है। यह गलत है; इसे ठीक किया जाना चाहिए। ओवैसी ने वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेंसिव रिविजन -एसआईआर की भी आलोचना की और इसे पिछले दरवाजे से एनआरसी करार दिया। उन्होंने आगे कहा कि बिहार में एसआईआर प्रक्रिया के दौरान भी मैंने आवाज उठाई थी।

जम्मू-कश्मीर में यूसीसी नहीं करेंगे लागू : उमर

» बोले- संसद में लाएं विधेयक

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) जम्मू-कश्मीर में किसी भी कीमत पर लागू नहीं किया जाएगा। पूरे देश के लिए ऐसे कानून पर संसद में बहस होनी चाहिए और इसे वहीं पारित किया जाना चाहिए। उन्होंने भाजपा व केंद्र सरकार को चुनौती दी कि यदि हिम्मत है तो वे संसद में विधेयक लेकर आए।

उमर ने कहा कि कोई भी कानून तब तक सही मायने में यूनिफॉर्म (एकसमान) नहीं कहा जा सकता जब तक वह पूरे देश में एक साथ लागू न हो। भाजपा शासित राज्य इसे टुकड़ों में लागू कर रहे हैं जो पूरी तरह से गलत है। केंद्र इसे अलग-अलग राज्यों के माध्यम से लागू करने के बजाय सीधे संसद में विधेयक के रूप में पेश करें। उन्होंने कहा कि बिहार में भी सत्ताधारी दल ने इसे लागू न



करने की बात कही है। जम्मू-कश्मीर सरकार भी इसे अपने यहां लागू नहीं करेगी। इंडिया ब्लॉक के सांसदों के चुनाव आयोग कार्यालय तक मार्च करने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि यह प्रक्रिया आगे भी जारी रहेगी। मतदाता सूची से बड़े पैमाने पर नाम हटाए

जाने के आरोपों पर उमर ने कहा कि विपक्ष इस मुद्दे को लंबे समय से उठा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने भी इस मामले को पूरी गंभीरता से लिया है। अब यह देखना बाकी है कि चुनाव आयोग और केंद्र सरकार से जवाब मिलने के बाद सुप्रीम कोर्ट इसे सुधारने के लिए क्या कदम उठाता है। बांग्लादेशियों और रोहिंग्याओं पर कार्रवाई पर उमर ने कहा कि रोहिंग्याओं को जब उनके अपने देश से खदेड़ा गया था तब मानवीय आधार पर उन्हें यहां शरण और रहने की जगह दी गई थी। अब अचानक उनके खिलाफ इस तरह की कार्रवाई करना काफी अजीब लगता है।

हालांकि, कानून-व्यवस्था के पहलू के मद्देनजर बिना दस्तावेज अवैध रूप से रहने वाले बांग्लादेशियों का मामला अलग है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में पुलिस और कानून-व्यवस्था केंद्र और उपराज्यपाल के अधीन है।

बामुलाहिजा

कार्टून : हसन जैदी



बिहार में एक और चुनाव, लगा सियासी दांव

- » पटना स्नातक और शिक्षक एमएलसी चुनाव का जोर
- » एनडीए और महागठबंधन के मतभेद जिताऊ समीकरण पर ग्रहण न लगा दें
- » राजद, भाजपा, जनासुराज कांग्रेस सभी जुटे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में एकबार फिर चुनावी सरगर्मी बढ़ गई है। राज्य में हो रहे 8 सीटों पर एमएलसी चुनाव में सबसे हॉट सीट बना पटना स्नातक और पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र में गठबंधन दलों के बीच मतभेद चरम पर है। इससे किसको कहां नुकसान और किसको कहां फायदा मिलेगा, कहा नहीं जा सकता।

लेकिन गठबंधन दलों के गड़बड़ाए चुनावी समीकरण जनसुराज के लिए तो एक मौका उपलब्ध कराते हुए दिख रहा है। संभावना यह भी है महागठबंधन ने जातीय गणित के हवाले से ऐसे उम्मीदवार उतारे हैं, जो एनडीए उम्मीदवार के लिए कहीं वरदान न बन जाएं। महागठबंधन और एनडीए के घोषित उम्मीदवारी से राजनीति को लोग समझने की कोशिश कर रहे हैं।



कांग्रेस ने दिया राजद को झटका

राजनीतिक विश्लेषक का मानना है कि बिहार एमएलसी चुनाव में पटना गेजुएट सीट से कांग्रेस द्वारा मुस्लिम प्रत्याशी उतारना आरजेडी के लिए बड़ा झटका साबित हो सकता है। एनडीए और आरजेडी दोनों द्वारा ही किसी अल्पसंख्यक को टिकट न दिए जाने के बीच कांग्रेस का यह दांव एक तीर से दो निशाने साधने जैसा है। इसके जटिल कांग्रेस अल्पसंख्यक समाज को यह स्पष्ट संदेश देना चाहती है कि उनके मान-सम्मान और राजनीतिक पद की चिंता आरजेडी के मुकाबले उसे ज्यादा है, जिससे वह आरजेडी के कोर एमवाई समीकरण में सीधे तौर पर संलग्न होने में सफल दिख



रही है। अब तक महागठबंधन से निराश होकर जन सुराज का रुख कर रहे मुस्लिम मतदाताओं को कांग्रेस के रूप में अपना एक और पारंपरिक विकल्प दिखाई देने लगा है। लिज्जा, कांग्रेस का यह फैसला जहां आरजेडी को भारी राजनीतिक क्षति पहुंचा सकता है, वहीं जन सुराज की राह को भी मुश्किल बना सकता है।

जनसुराज ने बदला प्रत्याशी, घोषित उम्मीदवार के टिकट छोड़ने पर तिरहुत सीट पर नए नाम का एलान

जनसुराज ने तिरहुत शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से होने वाले चुनाव के लिए श्याम नंदन यादव को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मनोज भारती ने उनके नाम की घोषणा की। श्याम नंदन यादव ने जनसुराज से पहले राष्ट्रीय जनता दल में थे। जनसुराज में शामिल होने के बाद उन्हें उम्मीदवार बनाया गया है। इससे पहले जनसुराज ने

भूषण कुमार झा को उम्मीदवार बनाया था लेकिन एक दिन पहले ही उन्होंने जनसुराज छोड़ दिया और निर्दलीय चुनाव लड़ने का एलान किया था। इसे सियासत गरमा गई थी। अब 24 घंटों के अंदर प्रशांत किशोर की पार्टी ने अपने नए उम्मीदवार के नाम की घोषणा कर दी है। बता दें कि तिरहुत शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र में जन सुराज के प्रत्याशी

उम्मीदवार भूषण कुमार झा के बयान के बाद विवाद खड़ा हो गया था। भूषण झा ने 25 सितंबर को शहर के एक होटल में प्रशांत किशोर की मौजूदगी में हुई बैठक के बाद जन सुराज छोड़कर निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने का एलान किया। उन्होंने बैठक के दौरान अपने और समर्थक शिक्षकों के साथ कथित व्यवहार को लेकर कई आरोप लगाए।

महागठबंधन में फूट पर मंत्री अशोक चौधरी ने ली चुटकी

बिहार के खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री अशोक चौधरी ने कांग्रेस के एमएलसी उम्मीदवार को लेकर महागठबंधन में चल रही खींचतान पर बड़ा बयान दिया है। इसी बहाने उन्होंने एमएलसी चुनाव में राजद और कांग्रेस के बीच जबरदस्त घमासान पर चुटकी भी ली है। उन्होंने तर्ज कसते हुए कहा है कि दरअसल दोनों पार्टियों में आपसी समझ की कमी है। एक तरह से उन्होंने राजद और कांग्रेस दोनों को अपरिपक्व ही बता दिया है। मंत्री अशोक चौधरी ने कहा कि गठबंधन में मतभेद कोई नई बात नहीं है, विधानसभा चुनाव में भी यही देखने को मिला था। साथ ही उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को बिहार की राजनीति की घुरी बताते हुए कहा कि अपने विकास कार्यों के दम पर ही आज जनता उन्हें विश्वकर्मा, विकास पुरुष और बिहार का गांधी कहती है। कांग्रेस के एमएलसी उम्मीदवार और महागठबंधन में मतभेद को लेकर बिहार के खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री अशोक चौधरी ने कहा, यह कोई नई बात नहीं है, विधानसभा चुनाव के दौरान भी ऐसी स्थिति देखने को मिली थी। आपसी समझ की कमी के कारण ही इस तरह के झगदाव बनते हैं। मंत्री अशोक चौधरी ने कहा कि बिहार और देश की राजनीति में नीतीश कुमार एक घुरी हैं। अपने कार्यों के कारण ही आज प्रदेश की जनता उन्हें बिहार का विश्वकर्मा और विकास पुरुष कहती है। प्रदेश के लोग उन्हें बिहार का गांधी और मानस पिता भी कहते हैं। इसका कारण है कि उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से ऐसे कार्य किए हैं, जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था और जिनका परिणाम 10 से 15 वर्षों में देखने को मिला है।

एनडीए का ये है प्लान

जीत की पटकथा लिखनी शुरू की। प्रो नवल किशोर यादव यादव जाति से और नीरज कुमार भूमिहार जाति से। इसके अलावा बीजेपी के आधार वोट वैश्य और अन्य सवर्ण तो साथ खड़े हैं ही। पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कारण कुर्मी, अतिपिछड़ा और दलित वोटों का भरोसा भी है। लेकिन पटना स्नातक क्षेत्र पर ग्रहण लगा गए मोकामा के विधायक अनंत सिंह अपने खुलेआम विरोध से। इससे एनडीए का सवर्ण वोटर खास कर भूमिहार वोटरों में डिविजन करते तो दिख रहा है। यह विभाजन जदयू उम्मीदवार नीरज कुमार और बीजेपी अपने प्रयास से कितना रोक पाएगी, परिणाम तो उसी पर आधारित होगा। ऐसे में जनसुराज इस मौके का फायदा उठा पाता है या नहीं यह तो चुनाव परिणाम के बाद ही चलेगा।

महाराष्ट्र व गुजरात में फिर निकली सियासी बात

- » भाजपा और विपक्ष में छिड़ी बयानबाजी
- » सूखे को लेकर एनसीपीएसपी का हल्ला बोल
- » बाघेला व जरांगे का आरक्षण पर राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र व गुजरात में राजनीति फिर चर्चा में है। मराठी राज्य में जहां सूखे व बाढ़ को लेकर राय है तो गुजरात में पुराने भाजपा नेता शंकरसिंह बाघेला के बयान से माहौल गरमाया है। महाराष्ट्र में सीजेपी के आंदोलन व जरांगे के आरक्षण पर बयान भी सियासी सरगर्मी बढ़ा रहे वहीं एनसीपी एसी नेता शरद पवार का एनडीए में न जाने की बात कहने के बाद भी सियासी पारा चढ़ा है।

गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह बाघेला ने साफ किया है कि उन्होंने आरक्षण पर अपनी टिप्पणी पूरी जिम्मेदारी के साथ दी थी और वह अपने बयान से पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा आरक्षण-विरोधी है और यह विवाद जानबूझकर खड़ा किया जा रहा है।



एक बार फिर कांग्रेस में शामिल होने की अटकलें

मैंने इस बारे में बात की कि आरक्षण अखिर क्यों दिया गया था। बाघेला ने यह कहते हुए विवाद खड़ा कर दिया था कि अगर पटेल, बनिया या ब्राह्मण समुदायों के लोग हाथ से मैला उठाने का काम करने को तैयार हों, तो वे उन्हें हर महीने 50,000 रुपये देंगे। उन्होंने ऐतिहासिक रूप से पिछड़े समुदायों के लिए आरक्षण का समर्थन करते हुए यह टिप्पणी की थी। बाघेला ने कहा था, आरक्षण कोई एहसान के तौर पर नहीं मिला है; यह जीवन भर की तकलीफों और संघर्ष से खसिल किया गया है। यह विवाद ऐसे समय में पैदा हुआ है, जब 86 वर्षीय बाघेला के एक बार फिर कांग्रेस में शामिल होने की अटकलें लगाई जा रही हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने अपने वीडियो संदेश में कहा कि वह दलित समुदाय के साथ ऐतिहासिक रूप से हुए भेदभाव की बात कर रहे थे, जिसमें मंदिरों और पीने के पानी तक पहुंच से वंचित किया जाना और बारात निकालने से रोका जाना शामिल है। उन्होंने कहा, मैंने इस बारे में बात की कि आरक्षण क्यों दिया गया था। दलित समुदाय के संदर्भ में—जिन्हें हाथ से मैला उठाना पड़ता था, जो मंदिरों में नहीं जा सकते थे, जिनके पास पीने के पानी की सुविधा नहीं थी और जो गांव में बारात नहीं निकाल सकते थे—मैंने कहा कि आरक्षण उनके लिए मुआवजा था। बाघेला ने इन आरोपों को भी खारिज कर दिया कि उनकी टिप्पणी ब्राह्मणों या किसी अन्य अगड़ी जाति के खिलाफ थी।

भाजपा मुझे समझाएं कि मैं ब्राह्मण-विरोधी कैसे

उन्होंने पूछा, मुझे समझाएं कि मैं ब्राह्मण-विरोधी कैसे हूँ। (जब मैं मुख्यमंत्री था) परशुराम जयंती की छुट्टी की अनुमति किसने दी थी? जिस व्यक्ति ने ब्राह्मण समाज को भगवान परशुराम जयंती की छुट्टी दी, क्या वह आज आपका विरोधी हो सकता है? बाघेला ने पूछा कि क्या कोई ऐसी घटना बता सकता है, जब उन्होंने पटेल समुदाय

का विरोध किया हो। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने आरक्षण के बारे में एक साल पहले भी ऐसी ही बातें कही थीं और सवाल किया कि तब किसी ने आपत्ति क्यों नहीं जताई थी। बाघेला ने भाजपा पर विवाद खड़ा करने का आरोप लगाते हुए कहा कि उनकी टिप्पणी सत्ताधारी पार्टी के खिलाफ थी। उन्होंने कहा, भाजपा के लोग भी आरक्षण-

विरोधी हैं। बाघेला ने कहा कि उनकी टिप्पणी का मकसद अलग-अलग समुदायों के अधिकारों का समर्थन करना था। उन्होंने कहा, मैंने जो कुछ भी कहा है, पूरी जिम्मेदारी के साथ कहा है। मैंने दलित समुदाय, आदिवासियों, अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और महिलाओं के आरक्षण के अधिकारों के लिए ये बातें कही। पूर्व

मुख्यमंत्री ने कहा, शंकरसिंह बाघेला कभी भी किसी अगड़ी जाति के विरोधी नहीं हो सकते। भाजपा की गुजरात इकाई के पूर्व मीडिया समन्वयक और 'समस्त ब्रह्म समाज' के समन्वयक यशेश दवे ने शनिवार को बाघेला की टिप्पणियों पर आपत्ति जताते हुए कहा था कि समुदायों या जातियों के बीच दूरमनी पैदा करना गलत है।

भाजपा की सरकारें आरक्षण-विरोधी हैं : बाघेला

गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह बाघेला ने आरक्षण से जुड़े अपने विवादित बयान के लिए माफी मांगने से इनकार करते हुए कहा कि उन्होंने यह बयान पूरी जिम्मेदारी के साथ दिया था और अपने राजनीतिक जीवन में कभी भी अपनी किसी बात से पीछे नहीं हटे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने रविवार को जारी एक वीडियो संदेश में कहा कि उन्होंने गांधी जयंती पर नर्मदा जिले के सांगरामा में आदिवासी किसानों की एक सभा में जो बातें कही



थी, वे केंद्र और गुजरात में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकारों पर

लखित थीं, जो आरक्षण-विरोधी हैं। उन्होंने कहा, शंकरसिंह बाघेला अपनी जिंदगी में कभी अपने बयानों से पीछे नहीं हटे हैं। मैंने जो कुछ भी कहा, वह कह दिया और उसके लिए माफी मांगने का कोई सवाल ही नहीं उठता। बाघेला ने कहा कि यह बात भाजपा सरकार और आरक्षण के प्रति उसके विरोध के संदर्भ में कही गई थी। उन्होंने कहा, लोग समाज का 70 प्रतिशत हिस्सा हैं। भाजपा सरकार इनका विरोध करती है।

किसान सम्मान निधि योजना पर की बात

उन्होंने आगे कहा कि केंद्र की प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों को हर साल 6,000 रुपये और राज्य की नमो शेतकरी महसुसमान निधि योजना के तहत 6,000 रुपये दिए जाते हैं यानी किसानों को कुल 12,000 रुपये की वार्षिक सहायता मिलती है। पिछले साल भी अतिवृष्टि से प्रभावित किसानों को सरकार ने मदद दी थी। उपमुख्यमंत्री शिंदे ने कहा कि सरकार की तिजोरी पर पहला अधिकार बलीराज का है। किसान संकट में है, तो सरकार मदद करने में कोई कमी नहीं रखेगी।

पीएम से मिले शिंदे, करीब 1 घंटे तक चली बातचीत

महाराष्ट्र में भीषण सूखे की स्थिति को लेकर शिवसेना के मुख्य नेता और राज्य के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच करीब एक घंटे तक सूखे की स्थिति और उससे निपटने के उपायों को लेकर चर्चा हुई। बैठक के बाद प्रचारकों से बातचीत में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि राज्य में सूखे का संकट गंभीर है और केंद्र सरकार सूखा राहत के लिए महाराष्ट्र को बड़ी आर्थिक सहायता



देगी, ऐसा उन्हें विश्वास है। उन्होंने कहा कि सूखे की इस कठिन घड़ी में सरकार किसानों को अकेला नहीं छोड़ेगी और किसानों की दिवाली काली नहीं होने दी जाएगी। सरकार किसानों के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है। एकनाथ शिंदे ने कहा कि आज की

बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र में सूखे की स्थिति की गंभीरता से जानकारी ली। प्रधानमंत्री ने राज्य में पानी की स्थिति, खेती और पशुओं के चारे की उपलब्धता के बारे में जानकारी ली। शिंदे ने बताया कि उन्होंने प्रधानमंत्री को जानकारी दी कि राज्य सरकार का नर्मिंहल सूखा प्रभावित क्षेत्रों में किसानों के बीच पहुंचा और उन्हें मानसिक सहारा दिया। प्रधानमंत्री ने महोसा दिलाया कि सूखे का संकट बड़ा है और केंद्र सरकार किसानों के साथ मजबूती से खड़ी है।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

कोई गोली या गाली नहीं मार सकती गांधी के विचार

66

गांधी किसी एक कालखंड, राजनीतिक दल या विचारधारा की संपत्ति नहीं हैं। वे एक ऐसे जीवन-दर्शन का नाम हैं, जिसकी धुरी सत्य, अहिंसा, आत्मानुशासन, स्वावलंबन, सेवा, स्वदेशी, ग्रामोदय, सामाजिक समरसता और मानव-मर्यादा है। इसलिए आज आवश्यकता गांधी के पुनर्जन्म की ही नहीं, गांधी-दृष्टि के पुनर्जागरण की है।

2 अक्टूबर गांधी जयंती होती है। पूरी दुनिया महात्मा गांधी को याद करती है। आज जब पूरी दुनिया लड़ रही है ऐसे में भारत के इस महान नेता की कथनों को दुनिया के नेताओं को सुनाना चाहिए और अहिंसा से पूरे विश्व में शांति का प्रयास करना चाहिए। यही सच्ची मानवता और महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि होगी। कुल मिला उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करना ही उनको सच्ची पुष्पांजलि होगी। उन्हें याद करना केवल अतीत के एक महान व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि देना नहीं है, बल्कि अपने वर्तमान की दिशा और भविष्य की दशा पर विचार करना भी है। गांधी किसी एक कालखंड, राजनीतिक दल या विचारधारा की संपत्ति नहीं हैं। वे एक ऐसे जीवन-दर्शन का नाम हैं, जिसकी धुरी सत्य, अहिंसा, आत्मानुशासन, स्वावलंबन, सेवा, स्वदेशी, ग्रामोदय, सामाजिक समरसता और मानव-मर्यादा है। इसलिए आज आवश्यकता गांधी के पुनर्जन्म की ही नहीं, गांधी-दृष्टि के पुनर्जागरण की है।

लेकिन वक्त की विडम्बना देखिये कि गांधी को हम बार-बार कटघरे में खड़ा करते हैं और उनकी छवि को धुंधलाने की कोशिश में कोई कमी नहीं छोड़ते। जो मानसिकता गोली मार सकती है, वह गाली दे तो क्या आश्चर्य पर महात्मा गांधी भारत के अकेले ऐसे महापुरुष हैं जिन्हें कोई गोली या गाली नहीं मार सकती। गांधी को जितना इतिहास में खोजेंगे, उतना ही वे अतीत के लगेंगे; उन्हें वर्तमान के प्रश्नों से जोड़ेंगे तो वे भविष्य के मार्गदर्शक बन जाएंगे। क्योंकि महात्मा गांधी बीसवीं शताब्दी में दुनिया के सबसे सशक्त, बड़े एवं प्रभावी नेता के रूप में उभरे, वे बापू एवं राष्ट्रपिता के रूप में लोकप्रिय हुए, वे एक रचनात्मक व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने ही मूल्यों के बल पर देश को आजादी दिलाई, नैतिक एवं स्वस्थ मूल्यों को स्थापित किया। उनके द्वारा निरूपित सिद्धान्त आज की दुनिया की चुनौतियों एवं समस्याओं के समाधान के सबसे सशक्त माध्यम है। आज भारत 'नए भारत' और 'विकसित भारत' के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। इस यात्रा में गांधी को नए संदर्भ में देखने की जरूरत है। गांधी का स्वदेशी केवल चरखे तक सीमित नहीं था उसका मूल भाव आत्मनिर्भरता था। गांधी की सबसे बड़ी शक्ति यह थी कि उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं माना। उनके लिए राजनीति का नैतिक आधार सेवा था। आज लोकतंत्र को केवल चुनावों और संस्थाओं तक सीमित न रखकर संवाद, सहभागिता, उत्तरदायित्व और जनविश्वास से जोड़ने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की लोकतांत्रिक परंपरा, संवाद और सहभागिता की विरासत को रेखांकित किया है।

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

सार्वजनिक नैतिकता का संकट

इरा पांडे

हाल के दिनों में हम पर जिस तरह चुनाव आयोग को लेकर विवाद और पाकों तथा सड़कों पर अकेली लड़कियों के साथ यौन हमलों की खबरों की बमबारी हुई है, उसे दोहराने का कोई मतलब नहीं है। मुझे इस बात से गहरा आघात पहुंचता है कि इस तरह की खबरों से अक्सर क्या संदेश निकलता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस पक्ष में खड़े हैं। जो बात साफतौर पर सार्वजनिक नैतिकता के संकट की ओर इशारा करती है, उस पर बहस के लिए अंक जुटाने का कोई सवाल ही नहीं होना चाहिए। लेकिन ऐसा लगता है कि हम सब पीछे हटकर बैठे हैं और शोर मचाने वाले इन्फ्लुएंसर्स, पक्षपाती मीडिया और राजनीतिक दलों को आपस में लड़ने दे रहे हैं। हमारा क्या? क्या हमारे पास अपनी कोई भूमिका ही नहीं है? अपने सुरक्षित गेटेड कॉलोनिजों में, बाहरी लोगों और बाहरी दुनिया से बचाने के लिए दरवाजे मजबूती से बंद करके, अब हमारी एकमात्र चिंता यह रह गई है कि हमारी निजी जगहें साफ-सुथरी और सुरक्षित रहें।

यह एक भयावह बदलाव है और उस दुनिया से बिल्कुल अलग है जिसमें हम बड़े हुए। यह सोचकर मुझे डर लगता है कि अगर हमारे पोते-पोतियां खुद को उपकरणों, सीसीटीवी और मोबाइल फोन के पीछे बंद कर लेंगे, तो वे बड़े होकर कैसे इंसान बनेंगे? इसके विपरीत हमारा बचपन शोर-शराबे और दूसरों के जीवन में दखल देने वाला था। लोग पूरे मोहल्ले पर नजर रखते थे। बुजुर्ग दादियां कामकाजी मां को बता देती थीं कि जब वह काम पर थी, तब कोई लड़का उसकी बेटी से मिलने आया था या माता-पिता के बाहर होने पर कोई लड़का चोरी-छिपे सिगरेट पी रहा था। उनकी पैनी नजरों से कुछ नहीं बचता था। और भगवान जाने, उन्होंने कितनी मानसिक स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को पनपने से रोक दिया होगा। हमारे समय में लड़कियों का पीछा करने वाले या

उनके आसपास मंडराने वाले लड़कों को 'ईव-टीजर' कहा जाता था। उनके 'हथियार' सीटी बजाना या अश्लील टिप्पणियां करना भर थे। शारीरिक छेड़छाड़ या यौन हिंसा खासकर विश्वविद्यालय परिसरों में बहुत, बहुत दुर्लभ थी। मैं 1968 से 1972 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग की छात्रा थी। दोपहर दो बजे के बाद हमारा अंग्रेजी विभाग ही कानून संकाय के रूप में भी इस्तेमाल होता था। उन दिनों हम कानून के सभी छात्रों को गुंडा और लफंगा समझते थे। हालांकि वे व्यक्तिगत और अक्सर मजाकिया टिप्पणियां करते थे, लेकिन मुझे याद नहीं कि उन्होंने



कभी शारीरिक बदतमीजी की हो। बेशक, हम लड़कियां खुद को सुरक्षित रखने के लिए समूह में छात्रावास या विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी तक जाती थीं। उन लड़कों की कुछ टिप्पणियां आज भी मुझे मुस्कराने पर मजबूर करती हैं, लेकिन जहां तक मुझे याद है, कोई अश्लील हरकत या शारीरिक छेड़छाड़ नहीं होती थी। लेकिन इस पूरे मामले में सबसे बड़ा अनकहा सच घरों के भीतर होने वाली यौन हिंसा थी। जिन बड़े संयुक्त परिवारों में हम रहते थे, उनमें अक्सर कोई विधवा बड़ी बुआ या अविवाहित महिला रिश्तेदार होती थी, जो परिवार के कामुक पुरुषों का निशाना बन जाती थी। जब मैंने 'मॉनसून वेडिंग' में अभिनय किया, तब मुझे अहसास हुआ कि यह घटना कितनी व्यापक थी और परिवार की इज्जत बचाने के नाम पर इसे किस तरह हमेशा दबा दिया जाता

था। चाचा, चचेरे भाई, यहां तक कि पुरुष घरेलू नौकर भी छोटी लड़कियों और अविवाहित महिलाओं के साथ ऐसी यौन हिंसा करते थे, जिसके बारे में सोचना भी कठिन है। इसके बारे में बोल पाना बेहद मुश्किल था। और यदि कोई साहस जुटाकर कुछ कह भी देता, तो अक्सर उसकी मां, बड़ी बहन या चाची उसे सलाह देती कि इस बारे में किसी से एक शब्द भी न कहे। इसका कितनी युवा लड़कियों पर क्या असर पड़ा, यह समाजशास्त्रियों के अध्ययन और शोध का विषय है। लेकिन मैं इतना जरूर कह सकती हूं कि इस मामले में कोई भी संयुक्त परिवार पूरी तरह निर्दोष नहीं था। बाल शोषण, यौन हिंसा, यौन

अभिविन्यास, पत्नी के साथ मानसिक क्रूरता—इन सभी विषयों को दबाकर रखा जाता था। मैं खुद 75 वर्ष की उम्र में आकर ही इनके बारे में खुले तौर पर बोलने का साहस जुटा पाई हूं। पुरुषों को अपने किसी बड़े 'उद्देश्य' के नाम पर पत्नी और बच्चों को छोड़ देने की आजादी थी, महिलाओं को सारी महत्वाकांक्षाएं छोड़कर परिवार और खानदान की सेवा में अपनी प्रतिभा दफन करने के लिए मजबूर किया जाता था।

उस दौर के हमारे सभी महान राजनीतिक प्रतीक—गांधी और नेहरू सहित—अन्य महिलाओं के साथ संबंध रखने के मामले में दोषरहित नहीं थे, जबकि उनकी अपनी पत्नियां रसोई या महिलाओं के लिए निर्धारित हिस्सों से बाहर लगभग अदृश्य थीं। हमारे पारंपरिक घर पुरुषों और महिलाओं के अलग-अलग हिस्सों में बंटे हुए थे।

विवेक शुक्ला

राजधानी का मंदिर मार्ग बहुत लंबा नहीं है। करीब एक-सवा किलोमीटर होगा। यह सड़क मंदिरों से भरी है। इधर शिक्षा के मंदिर यानी स्कूल भी खूब हैं। दिल्ली की किसी और सड़क पर इतने स्कूल शायद ही हों। अजीब संयोग है। महात्मा गांधी ने इसी व्यस्त सड़क के दो मंदिरों में अस्पृश्यता और जाति की बुराई के खिलाफ लड़ाई लड़ी। मंदिर मार्ग के एक छोर पर बिरला मंदिर है तो दूसरे छोर पर वाल्मीकि मंदिर है। क्या इतने स्कूलों ने उन्हें शिक्षक बनने की प्रेरणा दी? शायद! पक्की बात यह है कि वाल्मीकि मंदिर में रहते हुए वे शिक्षक भी बने। पूरे अर्थों में बने। आज गांधी जयंती है। बीते कुछ दिनों से उस कमरे की साफ-सफाई चल रही है जिसमें गांधी जी रहे थे। वे यहां 1 अप्रैल 1946 से 10 जून 1947 तक ठहरे। बीच-बीच में कहीं गए भी, और फिर लौटे भी।

कुल दो सौ चौदह दिन यहीं बिताए। इससे बहुत पहले उन्होंने इसी सड़क पर एक और काम किया था। यहां 12 मार्च 1939 को उन्होंने बिड़ला मंदिर का उद्घाटन किया। शर्त साफ थी। मंदिर सबके लिए खुला रहेगा। दलित भी अंदर जा सकेंगे। दिल्ली में किसी वास्तुकार द्वारा डिजाइन किए गए इस प्रथम मंदिर का उद्घाटन करने से पहले उन्होंने यही शर्त रखी। जाति के आधार पर किसी का प्रवेश नहीं रोका जाएगा। आपको इसके मेन गेट के बाहर एक शिलापट्ट मिलेगी। उस पर साफ लिखा है कि यहां किसी की जाति के आधार पर प्रवेश पर रोक नहीं है। कुछ वर्षों बाद गांधी जी वाल्मीकि मंदिर में रहने आए। वे वाल्मीकि परिवारों के बीच मंदिर परिसर में रहे। यह समय उनके जीवन का खास अध्याय है। शायद

छुआछूत मिटाने का संदेश दिया गांधीजी की पाठशाला ने

गांधीजी ने दिल्ली स्थित मंदिर रोड के दो मंदिरों में अस्पृश्यता व जातिवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनकी वाल्मीकि मंदिर की पाठशाला यह कहने का तरीका था कि कोई अछूत नहीं होता। हर जाति के लिए खुला बिड़ला मंदिर उस दलील का एक हिस्सा था व वाल्मीकि मंदिर दूसरा। यानी मंदिर सबके हैं, शिक्षा सबकी है।

पहली और आखिरी बार वे पूरे अर्थों में शिक्षक बने। वे जानते थे कि वाल्मीकि समुदाय का जीवन बदलने का स्थायी रास्ता शिक्षा ही है। उनके प्रति उनका भाव गहरा था। जब वे आए तब अधिकतर वाल्मीकि परिवार झुगियां में रहते थे। वे गोल मार्केट, इरविन रोड और कर्नाट प्लेस के आसपास सफाई का काम करते थे।

इस समय कृष्ण विद्यार्थी वाल्मीकि मंदिर के केयरटेकर हैं। वे गांधी जी के शिक्षक बनने की कहानी सुनाते हैं। गांधी जी जब यहां आए तो उन्हें बहुत कष्ट हुआ। इसलिए कि वाल्मीकि परिवार लगभग पूरी तरह निरक्षर थे। किसी ने स्कूल का चेहरा तक नहीं देखा था। तब उन्होंने अपने कमरे में बच्चों और बड़ों को पढ़ाना शुरू किया। वे हिंदी पढ़ाते थे। अंग्रेजी भी पढ़ाते थे।



उनमें कृष्ण विद्यार्थी के पिता भी थे। गांधी जी अपनी कक्षाओं को लेकर बहुत गंभीर थे। कक्षा रोज की प्रार्थना से पहले शुरू होती थी। पाठ खत्म किए बिना वे अक्सर बड़े नेताओं से मिलने को टाल देते थे। दीवारों पर उस समय की तस्वीरें लगी हैं। वे पीली पड़ने लगी हैं। एक पेंटिंग कमरे की असली कहानी कहती है। उसमें कई बच्चे बापू के पांवों से लिपटे हैं। चित्रकार का नाम खो गया है। पर उस कमरे का भाव नहीं खोया। फर्श पर कालीन बिछा है।

बीच में लकड़ी की मेज है। गांधी जी उसी पर लिखते थे। दाईं ओर चारपाई पड़ी है। उसी पर वे सोते थे। पास में छोटा चरखा रखा है। कुछ नहीं हटाया गया। कमरा वैसा ही लगता है जैसा उनके रहने के समय था।

दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी से जुड़े ब्रदर सोलोमन जॉर्ज के मुताबिक, 'वे महीने भारत के राजनीतिक जीवन के सबसे व्यस्त महीनों में थे। कैबिनेट मिशन दिल्ली में था। सत्ता हस्तांतरण की बातें रोज चल रही थीं। कांग्रेस नेता सलाह के लिए वाल्मीकि बस्ती आते थे। फिर भी वे उन बच्चों के साथ बैठने का समय निकालते थे, जिनके हाथ में कभी किताब नहीं आई थी। गांधी जी की पाठशाला करीब तीस बच्चों से शुरू हुई। जल्दी ही करीब पचहत्तर हो गई।

गोल मार्केट, पहाड़गंज और इरविन रोड के लड़के-लड़कियां भी आने लगे। 'सोलोमन जॉर्ज यहां पर होने वाली सर्व धर्म प्रार्थना सभा में भाग लेते हैं। कक्षा के बाद बात किताब पर नहीं रुकती थी। बापू बच्चों से उनकी बस्ती, उनके मां-बाप के काम और उनके डर के बारे में भी पूछते थे। कई बच्चे पहली बार यह महसूस कर रहे थे कि कोई बड़ा आदमी उनकी बात सुनने के लिए रुका है। पढ़ाई उनके लिए केवल अक्षर सीखने का काम नहीं रही। वह ये भरोसा भी था कि वे भी किसी स्कूल की चौखट पार कर सकते हैं। गांधी जी के लिए पाठशाला केवल अक्षर और शब्द नहीं थी। बल्कि यह कहने का तरीका था कि कोई अछूत नहीं होता। हर जाति के लिए खुला बिड़ला मंदिर उस दलील का एक हिस्सा था। वाल्मीकि मंदिर की कक्षा दूसरा हिस्सा थी। एक जगह उन्होंने दरवाजा खोला। दूसरी जगह उन्होंने हाथ में किताब थमाई। दोनों काम एक ही सड़क पर हुए। दोनों का मतलब एक था। मंदिर मार्ग आज भी व्यस्त है। स्कूल और मंदिर साथ-साथ खड़े हैं। गांधी जी की याद भी साथ खड़ी है। उन्होंने यहां सिखाया कि मंदिर सबके हैं। शिक्षा सबकी है। कोई छोटा नहीं। कोई बड़ा नहीं।

20 मिनट में तैयार करें हेल्दी

टोमेटो साँस बच्चे भी चाटते रह जाएंगे उंगलियां



आजकल बाजार में मिलने वाली टोमेटो साँस और चटनियों में मिलावट, केमिकल और प्रिजर्वेटिव की खबरें लगातार सामने आती रहती हैं। दुकानों में मिलने वाले बर्गर चाउमीन में तो बहुत से दुकानवाले मिलावटी साँस का इस्तेमाल करते हैं। जरूरी है कि आप इन मिलावटी चीजों से दूर रहें और हेल्दी और शुद्ध खाने की ओर बढ़ें। अधिकतर बच्चे टोमेटो साँस का इस्तेमाल करते हैं, जिससे माता पिता की चिंता लाजमी है, क्योंकि बाजार की कई साँस में जरूरत से ज्यादा शुगर, कलर और केमिकल मिलाए जाते हैं। अगर आप भी अपने परिवार की सेहत को लेकर सजग हैं, तो अब घर पर ही आसानी से टोमेटो साँस बना सकते हैं। घर की बनी टोमेटो साँस स्वाद में शानदार होने के साथ पूरी तरह शुद्ध और पौष्टिक होती है। इसे बनाने में ज्यादा समय भी नहीं लगता और आप अपनी पसंद के अनुसार मसाले व मिठास एडजस्ट कर सकते हैं। खास बात यह है कि इसमें किसी भी तरह का कृत्रिम रंग या हानिकारक प्रिजर्वेटिव नहीं होता।

तरीका

सबसे पहले टमाटरों को अच्छी तरह धो लें और छोटे टुकड़ों में काट लें। अब इन्हें एक बर्तन में डालकर 10-15 मिनट तक उबालें। जब टमाटर नरम हो जाएं, तब गैस बंद कर दें और ढंढा होने दें। इसके बाद मिक्सर में पीसकर महीन पेस्ट बना लें। अगर आप बिल्कुल स्मूद साँस चाहते हैं, तो पेस्ट को छलनी से छान लें। मसालों के साथ धीमी

आंच पर पकाएं अब तैयार टमाटर पेस्ट को कड़ाही में डालें और धीमी आंच पर पकाना शुरू करें। इसमें चीनी, नमक, लाल मिर्च और बाकी मसाले डालें। लगातार चलाते रहें ताकि साँस तले में चिपके नहीं। करीब 15-20 मिनट

बाद साँस गाढ़ी होने लगेगी और इसकी खुशबू पूरे किचन में फैल जाएगी। जब साँस अच्छी तरह गाढ़ी हो जाए, तब इसमें सिरका डालें। सिरका साँस को लंबे समय तक खराब होने से बचाता है। इसे 5 मिनट और पकाएं। ध्यान रखें कि साँस बहुत

ज्यादा पतली न रहे। सही गाढ़ापन आने पर गैस बंद कर दें और साँस को पूरी तरह ढंढा होने दें। ढंढी होने के बाद साँस को कांच की साफ और सूखी बोतल में भर लें। इसे फ्रिज में स्टोर करें। अगर साफ-सफाई का ध्यान रखा जाए तो यह साँस 2-3 महीने तक आसानी से चल सकती है। घर की बनी यह टोमेटो साँस बच्चों के स्नैक्स, समोसे, पकोड़े और फ्रेंच फ्राइज के साथ बेहद स्वादिष्ट लगती है।

सामग्री

1 किलो लाल पके टमाटर, 2 चम्मच चीनी, स्वादानुसार नमक, आधा कप सिरका, थोड़ा सा लाल मिर्च पाउडर, 2-3 लहसुन की कलियां, काली मिर्च और दालचीनी (वैकल्पिक)।

चाय के साथ बनाएं चटपटी आलू चाट

शाम की चाय हो और साथ में कुछ स्वादिष्ट न हो, तो मजा अधूरा लगता है। इन दिनों कई शहरों में बारिश भी हो रही है। बेमौसम बरसात में तो चाय के साथ कुछ चटपटा स्नैक्स और लजीज लगता है। ऐसे में आलू चाट एक परफेक्ट ऑप्शन है। यह रेसिपी न सिर्फ आसान है बल्कि इसका चटपटा स्वाद हर किसी को पसंद आता है। ये रेसिपी जल्दी बन जाती है। कम सामग्री में तैयार हो जाती है। हर उम्र के लोगों को पसंद आता है।



सामग्री

3-4 उबले आलू, तेल (तलने के लिए), नमक स्वादानुसार, लाल मिर्च पाउडर, चाट मसाला, जीरा पाउडर, हरी चटनी, इमली की चटनी, नींबू का रस, बारीक कटा प्याज, हरा धनिया।

विधि

उबले आलू को क्यूब्स में काट लें। कढ़ाही में तेल गर्म करें और आलू को गोल्डन ब्राउन होने तक तल लें। तले हुए आलू में

नमक, लाल मिर्च, चाट मसाला और जीरा पाउडर डालें। अब इसमें हरी चटनी और इमली की चटनी मिलाएं। ऊपर से नींबू का रस, प्याज और हरा धनिया डालकर अच्छी तरह मिक्स

करें। आपकी चटपटी आलू चाट तैयार है। ऊपर से सेव डालकर और कंची बना सकते हैं। अनार के दाने डालें तो टेस्ट और बढ़ेगा। मसाला अपनी पसंद के अनुसार एडजस्ट करें।



हंसना मना है

वाईफ टीवी पर मंच देख रही थी, हसबैंड स्मार्ट बनके आया और बोला, डार्लिंग मैं कैसा लग रहा हूँ? तभी वाईफ जोर से चिल्लाई, छक्का!

संता अपनी बीमारी की वजह से डॉक्टर के पास गया, डॉक्टर: आपकी बीमारी की सही वजह मेरी समझ में नहीं आ रही, हो सकता है दारु पीने की वजह से ऐसा हो रहा हो, संता: कोई बात नहीं डॉक्टर साहब, जब आपकी उतर जाएगी तो मैं दोबारा आ जाऊंगा।

रुपेश: पापा मुझे एक लड़की पसंद है, मैं उससे शादी करना चाहता हूँ.. पापा: क्या वो भी तुझे पसन्द करती है? रुपेश: हां जी हां.. पापा: जिस लड़की की पसन्द ऐसी हो, मैं उसे अपनी बहू नहीं बना सकता।

सरदार दुखी था। किसी ने पुछा: क्यों टेंशन में हो? सरदार: यार एक दोस्त को प्लास्टिक सर्जरी के लिए 2 लाख दिए, अब उसको पहचान नहीं पा रहा हूँ।

कहानी

कबूतर और मधुमक्खी

एक समय की बात है। एक जंगल में नदी किनारे एक पेड़ पर कबूतर रहता था। उसी जंगल में एक दिन कहीं से एक मधुमक्खी भी गुजर रही थी कि अचानक से वह एक नदी में जा गिरी। उसके पंख गीले हो गए। उसने बाहर निकलने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन वह नहीं निकल सकी। जब उसे लगा कि वह अब मर जाएगी, तो उसने मदद के लिए चिल्लाना शुरू कर दिया। तभी पास के पेड़ पर बैठे कबूतर की नजर उस पर पड़ गई। कबूतर ने उसकी मदद करने के लिए तुरंत पेड़ से उड़ान भर ली। कबूतर ने मधुमक्खी को बचाने के लिए एक तरकीब सोची। कबूतर ने एक पत्ते को अपनी चोंच में पकड़ा और उसे नदी में गिरा दिया। वह पत्ता मिलते ही मधुमक्खी उस पर बैठ गई। थोड़ी ही देर में उसके पंख सूख चुके थे। अब वह उड़ने के लिए तैयार थी। उसने कबूतर को जान बचाने के लिए धन्यवाद बोला। उसके बाद मधुमक्खी वहां से उड़कर चली गई। इस बात को कई दिन बीत चुके थे। एक दिन वही कबूतर गहरी नींद में सो रहा था और तभी एक लड़का उस पर गुलेल से निशाना लगा रहा था। कबूतर गहरी नींद में था, इसलिए वह इस बात से अंजान था, लेकिन उसी समय वहां से एक मधुमक्खी गुजर रही थी, जिसकी नजर उस लड़के पर पड़ गई। यह वही मधुमक्खी थी, जिसकी कबूतर ने जान बचाई थी। मधुमक्खी तुरंत लड़के की ओर उड़ गई और उसने जाकर सीधे लड़के के हाथ पर डंक मार दिया। मधुमक्खी के काटते ही लड़का तेजी से चिल्ला पड़ा। उसके हाथ से गुलेल दूर जाकर गिरी। लड़के के चिल्लाने की आवाज सुनकर कबूतर की नींद खुल गई थी। वह मधुमक्खी के कारण सुरक्षित बच गया था। कबूतर सारा माजरा समझ गया था। उसने मधुमक्खी को जान बचाने के लिए धन्यवाद बोला और दोनों जंगल की ओर उड़ गए।

7 अंतर खोजें



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेघ 	कार्यक्षेत्र में नया दायित्व मिल सकता है, तत्पर रहें। व्यापार में तेजी आएगी, ग्राहकों का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक वातावरण प्रेमपूर्ण रहेगा। आर्थिक लाभ मिलने की संभावना है।	तुला 	नौकरी में पद और प्रभाव बढ़ने की संभावना है। व्यापारिक रणनीतियां सफल होंगी, मुनाफा होगा। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। धन लाभ होगा, आर्थिक स्थिति सुधरेगी।
वृषभ 	कार्यस्थल पर नई शुरुआत हो सकती है, धैर्य रखें। व्यापार में साझेदारी लाभदायक सिद्ध होगी। दौलत जीवने में मधुरता बनी रहेगी। वित्तीय लाभ के योग बन रहे हैं।	वृश्चिक 	कार्यस्थल पर आपकी पकड़ मजबूत होगी। व्यापार में प्रतिस्पर्धियों से आगे निकलने में सफल रहेंगे। परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।
मिथुन 	आपकी बुद्धि और चातुर्य से कठिन काम आसान होंगे। व्यापार में नई योजनाएं लागू करने का सही समय है। पारिवारिक रिश्तों में घनिष्ठता आएगी।	धनु 	नई योजना की शुरुआत के लिए दिन उत्तम है। व्यापार में अटकें काम गति पकड़ेंगे। संतान पक्ष से सकारात्मक समाचार मिलेगा। आय के नए साधन मिलने की संभावना है।
कर्क 	कार्यक्षेत्र में आपकी लगन की सराहना होगी। व्यापारिक सौदों में सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाएं। परिवार के साथ समय बिताने से खुशी मिलेगी।	मकर 	कार्यस्थल पर जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं, शांत रहें। व्यापार में लिखापट्टी में सावधानी रखें। परिवार में समस्याओं का हल मिलकर निकालेंगे। अनावश्यक व्यय पर रोक लगाएं।
सिंह 	करियर में अपनी प्रतिभा साबित करने का मौका मिलेगा। व्यापार में नए लोगों से जुड़ाव लाभदायक रहेगा। प्रेम संबंधों में नया मोड़ आ सकता है।	कुम्भ 	बुद्धिमत्ता से जटिल समस्याएं हल कर लेंगे। व्यापार में नए अनुबंध पर बात बन सकती है। मित्रों के साथ बेहतरीन समय बीतेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार के योग हैं।
कन्या 	कार्यस्थल पर समय का प्रबंधन बेहद जरूरी होगा। व्यापार में जल्दबाजी का कोई भी फैसला न लें। परिवार में किसी मुद्दे पर गहराई से विचार होगा।	मीन 	आपकी वाणी का प्रभाव कार्यस्थल पर दिखेगा। व्यापार में लाभ के अवसर मिलेंगे, प्रयास बढ़ाएं। परिवार में मांगलिक कार्यक्रम की रूपरेखा बनेगी।



सेल्स की दुकान है फिल्म इंडस्ट्री: हरलीन सेठी

कलाकारों की भीड़ में फिल्मकारों को याद दिलाते रहना होता है कि मैं भी हूँ। यह कहना है ब्रोकेन बट ब्यूटीफुल, कोहरा, काटमांडू कनेक्शन, शक ट्रस्ट नो वन समेत की वेब सीरीज में काम कर चुकी अभिनेत्री हरलीन सेठी का। बड़े पर्दे के लिए अपनी नई कामेडी फिल्म पर काम कर रही हरलीन कहती हैं कि आपको खुद को सामने पेश करना जरूरी है। कोई भी इंडस्ट्री हो, काम के अलावा भी कई फैक्टर होते हैं, जो आपको सफलता की ओर लेकर जाते हैं। लोगों से मिलना, अपना काम इंटरनेट मीडिया पर डालना, दिखना जरूरी है, ताकि आप याद रहें। काम मांगने में शर्म नहीं होनी चाहिए। किसी फिल्मकार का काम पसंद है, तो उसमें कह दें कि आपका काम पसंद है, अगर मेरे लिए कोई रोल होगा, तो बुलाइएगा। मैं मानती हूँ कि यह कठिन काम है, सेल्स की नौकरी की तरह है, जहां सुबह उठकर आप फोन लगाते हैं कि ये सामान ले लो, यहां

हम खुद ही प्रोडक्ट हैं, लेकिन अपने आपको सही तरीके से पेश करना अहम है। फिल्मकारों ने मुझे वह जिम्मेदारी दी है कि मैं जटिल रोल कर लेती हूँ। लेकिन बहुत सारा काम इस इंडस्ट्री में आपको किस्मत से मिलता है। अक्षय कुमार ने यह बात कही थी कि सही समय पर, सही जगह पर होना जरूरी है। बहुत सारे प्रतिभाशाली कलाकार हैं, सब अच्छा काम करना चाहते हैं, लेकिन उस समय पर, उस निर्माता-निर्देशक के सामने होना, आपका आडिशन उन्हें पसंद आना जरूरी है। ऐसा नहीं है कि मेहनत नहीं करनी है, लेकिन समय के साथ मेरी समझ यही भी कहती है कि किस्मत भी चाहिए। वह कहती हैं कि जब मैं डांस सीखती थी, तो मेरे डांस टीचर एशले लोबो ने मुझे सिखाया था कि फेक इट टिल यू मेक इट यानी जब तक कामयाब न हो जाओ, कामयाब होने का नाटक करते रहो। मैं इस बात को पकड़कर चली हूँ, जब अभिनय नहीं आता था, तब भी ऐसे दिखाती थी कि सब आता है। आडिशन रूम में यही सोचकर जाती थी कि मैं कर लूंगी। मुझे तो ऐसे लोगों के साथ काम करने का मौका मिला है, जो मुझसे बहुत सीनियर हैं, विक्रान्त मेस्सी, परिणीति चोपड़ा, शरद केलकर मंझे हुए कलाकार हैं, उनके सामने काम करते वक्त खुद को यकीन दिलाना था कि मैं कर लूंगी। अभिनय सीखा नहीं है, इस कारण मेरी मेहनत दोगुनी हो जाती है।

हॉलीवुड में सेट पर सबसे बड़ा स्टार भी समय पर पहुंचता है: विद्युत जामवाल

विद्युत जामवाल इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म स्ट्रीट फाइटर को लेकर चर्चा में हैं। ये उनकी ने अपनी हॉलीवुड डेब्यू फिल्म है। कल फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया गया। इस दौरान उन्होंने बॉलीवुड और हॉलीवुड में काम करने के तरीके को लेकर भी बात की और दोनों इंडस्ट्री के बीच का फर्क बताया। एक्टर स्ट्रीट फाइटर के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में शामिल हुए थे। जहां उन्होंने हॉलीवुड इंडस्ट्री की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि वहां पर कोई भी सेट पर देर से नहीं पहुंचता है। इवेंट में

जब विद्युत से पूछा गया कि इंडियन सिनेमा से हॉलीवुड के सेट पर काम करने का एक्सपीरियंस कितना अलग रहा? इस पर विद्युत जामवाल ने बड़ा फर्क बताया। उन्होंने कहा कि हॉलीवुड में लोग एक्स्ट्रा टाइम काम करना पसंद करते हैं, क्योंकि उन्हें हर एक्स्ट्रा मिनट के लिए पैसे मिलते हैं। उन्होंने कहा, हॉलीवुड में सेट पर सबसे बड़ा स्टार भी समय पर पहुंचता है। चाहे आप जेसन मोमोआ हों या कोई और, कोई देर से नहीं आता। सेट पर मौजूद सभी 300 लोग इसे फॉलो करते हैं। अगर आप एक मिनट भी लेट होते हैं, तो प्रोडक्शन से फोन आ जाता है कि आप ठीक हैं?

मंगलवार को दृश्यम 3 में आयी गिरावट



अजय देवगन की नई फिल्म दृश्यम 3 द कन्वल्जून एक ब्लॉकबस्टर फिल्म साबित हुई है। दृश्यम फ्रैंचाइजी की ये तीसरी और हिंदी में आखिरी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड बना रही है। अजय की फिल्म को जबरदस्त ओपनिंग मिली थी। पहले वीकेंड इसने भरपूर कमाई की, और अब कामकाजी दिनों में भी ये अपनी पकड़ बनाए हुए है। दृश्यम 3 की कमाई का अभी तक ग्राफ देखा जाए, तो सबकुछ पॉजिटिव ही नजर आया है। 62 करोड़ की ओपनिंग के

बाद, ये अजय देवगन के करियर की सबसे बड़ी फिल्म साबित होती नजर आई। पहले वीकेंड में दृश्यम की कमाई नेट 150 करोड़ पार गई। बीते कामकाजी दिनों के कारण कलेक्शन में भारी गिरावट देखने मिली। फिल्म ने मंडे टेस्ट आसानी से पास किया, हालांकि मंगलवार से उम्मीदें काफी ज्यादा थीं। सैकनलिक की रिपोर्ट के अनुसार, ये फिल्म मंगलवार यानी अपने पांचवे दिन 19 करोड़ का नेट कलेक्शन ही कर पाई। हालांकि, तब भी पांच दिनों में इसका टोटल कलेक्शन 216.50 करोड़ रुपये पहुंचा है।

स्क्रीनिंग से पहले सलमान खान की मातृभूमि में हुए कई बदलाव



सलमान खान की अपकमिंग वॉर ड्रामा फिल्म मातृभूमि में वॉर रेस्ट इन पीस की रिलीज का फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हाल ही में फिल्म को सरकार से एनओसी मिली थी। इन सबके बीच एक रिपोर्ट के मुताबिक फिल्म में एक बार फिर बड़े बदलाव किए गए हैं। दरअसल सीबीएफसी में स्क्रीनिंग से पहले, मेकर्स फ़िल्म के क्लाइमैक्स और एक्टर के किरदार के सफर पर फिर से काम कर रहे हैं। ये फिल्म पहले बैटल ऑफ गलवान के नाम से रिलीज होनी थी। लेकिन भारत-चीन संबंधों में सुधार के बाद इसके टाइटल से लेकर इसकी कहानी और ट्रीटमेंट में कई बड़े बदलाव पहले ही किए जा चुके हैं। मातृभूमि: मे वॉर रेस्ट इन पीस को इस हफ्ते सीबीएफसी द्वारा देखे जाने की उम्मीद है, और इसी बीच मेकर्स ने सलमान खान स्टारर इस फिल्म में और बदलाव किए हैं। मिड-डे की रिपोर्ट के मुताबिक फिल्म का क्लाइमैक्स फिर से लिखा गया है और सलमान के किरदार के सफर में भी बदलाव किए गए हैं। कहा जा रहा है कि ये बदलाव भारत-चीन संघर्ष के प्रति फिल्म के बदले हुए नजरिए और शांति के व्यापक संदेश को दर्शाते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक मेकर्स इस बात को लेकर काफी अलर्ट हैं कि संघर्ष को कैसे दिखाया जाए। बताया जा रहा है कि बदली हुई एडिंग को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह ट्रेडिशनल वॉर-ड्रामा के तौर पर खत्म होने के बजाय, सुलह और शांति पर फिल्म के जोर को बेहतर ढंग से दिखाए। खबरों के मुताबिक, फिल्म के बदले हुए वर्जन को पिछले हफ्ते ही सूचना और प्रसारण मंत्रालय से नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट मिल चुका है। मिड-डे की रिपोर्ट के मुताबिक, इसके बाद फिल्म को सीबीएफसी के पास जमा कर दिया गया है और अब मेकर्स स्क्रीनिंग की तारीख का इंतजार कर रहे हैं। अगर उम्मीद के मुताबिक इस हफ्ते सेंसर बोर्ड फिल्म की जांच कर लेता है, तो सर्टिफिकेशन प्रोसेस से इसके रिलीज प्लान के बारे में ज्यादा साफ जानकारी मिल सकती है। सलमान खान फिल्म्स के बैनर तले सलमा खान द्वारा प्रोड्यूस की गई फिल्म मातृभूमि: मे वॉर रेस्ट इन पीस का निर्देशन अपूर्व लाखिया ने किया है और इसमें चित्रांगदा सिंह भी अहम भूमिका में हैं यह इस फिल्म का नाम पहले बैटल ऑफ गलवान था, जिसे इस साल की शुरुआत में बदलकर मातृभूमि कर दिया गया। असल में यह फिल्म 2020 में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हुई गलवान घाटी की झड़प पर आधारित थी, लेकिन खबरों के मुताबिक, दोबारा शूटिंग के बाद फिल्म से चीन से जुड़े सभी रेफरेंस हटा दिए गए हैं।



क्रिकेट छोड़ बॉलीवुड डेब्यू करेंगे विराट कोहली? राहुल द्रविड़ ने खोला राज

विराट कोहली का नाम सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के महान क्रिकेटरों में शुमार हैं। मैदान पर उतरते ही वो अपने बल्ले से बड़ा धमाका करते हैं। लेकिन क्रिकेट के शिखर पर पहुंचने के बाद, क्या विराट अब बॉलीवुड में कदम रखेंगे? इस दिलचस्प सवाल का जवाब पूर्व भारतीय कप्तान और दिग्गज क्रिकेटर राहुल द्रविड़ ने दिया है। एक हालिया इंटरव्यू में पूर्व क्रिकेटर राहुल द्रविड़ ने इशारा किया कि विराट आगे चलकर कैमरे के सामने अपना करियर बना सकते हैं। शायद किसी बॉलीवुड फिल्म में काम कर सकते हैं।

BBC एशियन नेटवर्क के साथ बातचीत में राहुल से पूछा गया- आपकी टीम में से कौन सबसे बेहतरीन बॉलीवुड एक्टर बनेगा? इस इंटरव्यू में मौजूद अभिषेक बच्चन ने राहुल को याद दिलाया कि कई क्रिकेटर फिल्मों में काम कर चुके हैं। फिर राहुल द्रविड़ ने जवाब दिया- सुनील गावस्कर ने एक्टिंग करने की कोशिश की। सैयद किरमानी ने भी कोशिश की, लेकिन



उन्हें ज्यादा सफलता नहीं मिली। अजय जडेजा ने भी एक फिल्म की। अच्छी बात यह है कि वो क्रिकेट से ही जुड़े रहे। जब राहुल से पूछा गया कि क्या वो कभी फिल्मों में अपनी किस्मत आजमाएंगे, तो उन्होंने हंसते हुए जवाब दिया- नहीं। मुझे अपनी ताकत पता है। मैं खुद को बेवकूफ नहीं बनाने वाला। लेकिन थोड़ा सोचने के बाद उन्होंने विराट कोहली का नाम लिया और

कहा- मुझे लगता है कि विराट दूसरे लोगों की मिमिक्री काफी अच्छी करते हैं। वो लोगों की बहुत अच्छी नकल उतारते हैं। हालांकि आजकल वो ऐसा अक्सर नहीं करते, लेकिन मुझे याद है जब वो टीम में नए युवा खिलाड़ी के रूप में आए थे और हम सब सीनियर थे... तब लोगों की नकल उतारने का उनका हुनर वाकई शानदार था। उन्होंने ढेरों एड्स में भी काम किया है। वो इसमें काफी हद तक एक्सपर्ट बन चुके हैं। होस्ट ने फिर अनुष्का शर्मा का जिक्र करते हुए कहा- मुझे पूरा यकीन है कि अनुष्का उन्हें कुछ टिप्स दे सकती हैं। विराट और अनुष्का पहली बार एक एड फिल्म के सेट पर ही मिले थे। उसके बाद से विराट सैकड़ों विज्ञापनों में नजर आ चुके हैं।

नेता प्रतिपक्ष को हिरासत में लेने को लेकर बवाल

» कांग्रेस ने इसे बताया गैरकानूनी, केंद्र सरकार पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने मंगलवार को निर्वाचन आयोग के कार्यालय की ओर मार्च और दिल्ली में विरोध प्रदर्शन के बाद राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाद्रा और अन्य विपक्षी नेताओं को हिरासत में लिए जाने की निंदा करते हुए इसे 'गैरकानूनी' और एक 'नाकाम' सरकार के अहंकार का परिचायक बताया है।

रेड्डी ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार भारत, उसके संविधान और लोगों के मतदान के अधिकारों की रक्षा के लिए राहुल गांधी के नेतृत्व में

» 'ब्रिटिश जनता पार्टी' हमें रोक नहीं पाएगी : रेड्डी

मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा, लेकिन अब जब लाखों नागरिक, खासकर युवा, मतदान के अधिकारों, लोकतंत्र और देश के भविष्य की रक्षा के इस संघर्ष का हिस्सा बन चुके हैं तो ऐसी कार्यवाहियां विपक्ष को रोक नहीं पाएंगी बल्कि अगलाने में हमें और मजबूत ही

करेंगी। रेड्डी ने कहा, 'ब्रिटिश जनता पार्टी' यह समझ ले कि देश के लिए सब कुछ दांव पर लगाने के हमारे संकल्प और दृढ़ निश्चय में कोई कमी नहीं आएगी। भारत अपनी पूरी क्षमता के साथ तब तक संघर्ष करता रहेगा, जब तक राहुल गांधी के नेतृत्व वाली लोकतांत्रिक ताकतों की जीत नहीं हो जाती।' राहुल गांधी

और प्रियंका गांधी वाद्रा उन करीब 250 लोगों में शामिल हैं जिन्हें दिल्ली पुलिस ने आकाशवाणी भवन परिसर में आठ घंटे से अधिक समय तक धरना देने के बाद मंगलवार रात हिरासत में लिया था। इससे पहले उन्हें दिल्ली में निर्वाचन आयोग के कार्यालय की ओर मार्च करने से रोक दिया गया था।

सरकार का रवैया शर्मनाक, दूर होकर भी दिल दिल्ली में है: थरूर

थरूर ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से हाथपाई करने और उन्हें हिरासत में ले जाने की तस्वीरें देखकर मैं बहुत परेशान हूं। उन्हें ले जाने की प्रतिबद्धता के कारण मैं केवल दूर से अपनी एकजुटता व्यक्त कर सकता हूं। लेकिन मेरा दिल नयी दिल्ली में है। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि राहुल गांधी से हाथपाई करने और उन्हें हिरासत में लिए जाने की तस्वीरें देखकर वह बहुत परेशान हैं। उन्होंने कहा कि 13 करोड़ मतदाताओं को उनके माताधिकार से वंचित किए जाने के विरोध में हुए प्रदर्शन पर सरकार की प्रतिक्रिया शर्मनाक है। थरूर 'इंडिया' गठबंधन के सांसदों के साथ संसद भवन परिसर से यहां निर्वाचन आयोग के कार्यालय तक निकले गए मार्च में शामिल नहीं हो सके, क्योंकि वह जर्मनी के बर्लिन में थे।

उन्होंने मरोसा बताया कि न्याय जरूर मिलेगा। थरूर ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से हाथपाई करने और उन्हें हिरासत में ले जाने की तस्वीरें देखकर मैं बहुत परेशान हूं। उन्होंने कहा, चार महीने पहले बर्लिन में एक सम्मेलन में जाने की प्रतिबद्धता के कारण मैं केवल दूर से अपनी एकजुटता व्यक्त कर सकता हूं। लेकिन मेरा दिल नयी दिल्ली में है।

जारी संघर्ष से डरी हुई है। उन्होंने मौजूदा कार्यवाई की

तुलना ब्रिटिश सरकार द्वारा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल और सुभाष चंद्र बोस जैसे स्वतंत्रता सेनानियों को मामूली आधार पर गिरफ्तार किए जाने से की।



स्मृति मंधाना को मिली महिला टीम की कमान

हरमनप्रीत ने सभी प्रारूपों की छोड़ी कप्तानी

» जिम्बाब्वे सीरीज के लिए टीम घोषित, शेफाली और दीप्ति बनीं उपकप्तान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। भारतीय महिला क्रिकेट टीम के जिम्बाब्वे दौरे के लिए टी20 और वनडे टीम का ऐलान कर दिया गया है। स्मृति मंधाना को सभी प्रारूपों में टीम का कप्तान बनाया गया है। भारतीय टीम के नेतृत्व में यह बदलाव हरमनप्रीत कौर के सभी प्रारूपों की कप्तानी छोड़ने के फैसले के बाद हुआ है। हरमनप्रीत ने कप्तानी से हटने के बाद साफ किया था कि वह खिलाड़ी के तौर पर टीम के लिए उपलब्ध रहेंगी। नई कप्तान की अगुआई में भारतीय टीम जिम्बाब्वे के खिलाफ तीन मैचों की टी20 और तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी। शेफाली वर्मा को टी20 टीम का उपकप्तान, जबकि दीप्ति शर्मा को वनडे टीम का उपकप्तान बनाया गया है।

खिलाफ टी20 और वनडे दोनों टीमों में शामिल किया गया है। टी20 टीम में प्रतिका रावल को जगह नहीं मिली है, जबकि निकी प्रसाद, मित्रू मणि, अनुष्का शर्मा और जितिमनी कलित्ता को टीम में शामिल किया गया है। ये चारों खिलाड़ी हाल में ऑस्ट्रेलिया महिला टीम के खिलाफ सीमित ओवरों और बहु-दिवसीय सीरीज में खेल चुकी हैं। वनडे टीम में प्रतिका रावल और हरलीन देओल को मध्यक्रम में शामिल किया गया है। हालांकि, जेमिमा रोड्रिग्स टीम में जगह नहीं बना सकी हैं। इससे पहले गुवाहाटी में बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया, महिला टीम के मुख्य कोच अमोल मजूमदार और स्मृति मंधाना के साथ समीक्षा बैठक हुई थी। इसके बाद हरमनप्रीत ने यह फैसला लिया। बीसीसीआई ने अपनी वेबसाइट पर मंधाना को कप्तान बनाए जाने की घोषणा की। बोर्ड ने कहा, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड स्मृति मंधाना को भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान नियुक्त करता है।

न्यूजीलैंड दौरे के लिए भारतीय टी20 टीम में चार साल बाद भुवनेश्वर कुमार की वापसी

मुंबई। अनुभवी तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार की करीब चार साल बाद भारतीय टीम में वापसी हुई है। बीसीसीआई ने मंगलवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाली पांच मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज के लिए टीम की घोषणा की। भुवनेश्वर को 16 सदस्यीय टी20 टीम में शामिल किया गया है। यह चयन समिति के पूर्व अध्यक्ष अजीत अगरकर के पद से हटने के बाद पहला बड़ा चयन है। प्रज्ञान ओझा को अंतिम चयन समिति अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। सिंग गेंदबाजी के लिए पहचाने जाने वाले भुवनेश्वर के पास अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का लंबा अनुभव है। न्यूजीलैंड की परिस्थितियों में उनकी गेंदबाजी टीम इंडिया के लिए उपयोगी साबित हो सकती है। भुवनेश्वर के अलावा वरुण चक्रवर्ती की भी टीम में वापसी हुई है।



तमिलनाडु में हिंदी पर फिर मचा बवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोयंबटूर। तमिलनाडु में हिंदी को लेकर एक बार फिर विवाद खड़ा हो गया है। इस बार मामला सरकारी अस्पतालों में मरीजों को दी जाने वाली दवाओं के कवर से जुड़ा है। करूर और कोयंबटूर के सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में ऐसे कवर इस्तेमाल किए गए, जिन पर दवा कब और कितनी लेनी है, इससे जुड़े निर्देश तमिल और अंग्रेजी के साथ हिंदी में भी छपे थे। मामला सामने आने के बाद अस्पताल प्रशासन ने इन कवर का इस्तेमाल रोकने के निर्देश दे दिए। विवाद तब सामने आया जब डीएमके नेता टीआरबी राजा ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर करूर के सरकारी अस्पताल में इस्तेमाल किए जा रहे दवा के कवर की तस्वीरें साझा कीं।

उन्होंने सवाल उठाया कि क्या तमिलनाडु के अस्पतालों में भी तीन भाषा नीति लागू की जा रही है। राजा ने अपने पोस्ट में लिखा, ऐसा लगता है कि तमिलनाडु के अस्पतालों में भी तीन भाषा नीति लागू की जा रही है! पहले



करूर, अब कोयंबटूर में भी यही स्थिति है। करूर मेडिकल कॉलेज अस्पताल के डीन डॉक्टर एम. भारती मोहन के मुताबिक, अस्पताल आमतौर पर मदुरै जेल से तैयार कराए गए सादे भूरे कवर इस्तेमाल करता है। इन कवर पर अस्पताल की फार्मसी में रबर स्टॉप से तमिल में दवा लेने का समय लिखा जाता है। कवर की कमी होने पर दिसंबर 2025 में ईरोड की एक सहकारी प्रिंटिंग प्रेस से कवर मंगाए गए थे। डीन के अनुसार, अस्पताल ने

» दवा के कवर पर हिंदी दिखी तो भड़का विवाद
» डीएमके नेता टीआरबी राजा ने उठाया सवाल

इन पर कोई भाषा छापने का निर्देश नहीं दिया था, लेकिन बड़े आकार के कवर पर प्रिंटिंग प्रेस ने अपनी तरफ से दवा की खुराक और इस्तेमाल से जुड़े शब्द छाप दिए। अस्पताल में इन पर छपी हिंदी पर उस समय ध्यान नहीं गया और सोशल मीडिया पर मामला सामने आने के बाद इनका इस्तेमाल रोक दिया गया। कोयंबटूर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भी हिंदी वाले ऐसे कवर इस्तेमाल किए जा रहे थे। विवाद के बाद अस्पताल ने इन कवर को हटाकर सादे कवर इस्तेमाल करने शुरू कर दिए। अधिकारियों के मुताबिक, अब दवा देने से पहले कवर पर दवा की खुराक और लेने का तरीका हाथ से स्टॉप किया जाएगा।

राहुल गांधी अलोकतांत्रिक व्यक्ति : केटी रामा

» बीआरएस नेता की गिरफ्तारी पर भड़के कार्यकारी अध्यक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष के. टी. रामा राव ने अपनी पार्टी के एक नेता की गिरफ्तारी को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर हमला बोला और उन्हें कायर व अलोकतांत्रिक व्यक्ति बताया।

रामा राव ने यह बयान ऐसे समय में दिया जब राहुल गांधी एसआईआर प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं और मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर दिल्ली में निर्वाचन आयोग के कार्यालय की ओर विपक्ष के विरोध मार्च का नेतृत्व कर रहे थे। रामा राव बिना अनुमति के एक बैनर लगाने पर बीआरएस के एक नेता की गिरफ्तारी पर प्रतिक्रिया दे रहे थे।

तमिलनाडु में नाम हटाए जाने पर क्यों चुप थे नेता प्रतिपक्ष : अब्बादुरई

» डीएमके नेता ने राहुल गांधी को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु में विपक्षी द्रविड़ मुनेत्र कण्गम (द्रमुक) ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोलते हुए इस दक्षिणी राज्य में कथित तौर पर मतदाताओं के नाम हटाए जाने के मुद्दे पर उनकी 'चुप्पी' पर सवाल उठाया। द्रमुक के प्रवक्ता सरवनन अब्बादुरई ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में तमिलनाडु में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया के जरिए मतदाताओं के नाम हटाए जाने को लेकर राहुल गांधी के रुख पर सवाल उठाया।

अब्बादुरई ने कांग्रेस सांसद पर मतदाता सूची के पुनरीक्षण की इस कवायद को



लेकर "असंगत रुख अपनाने" का आरोप लगाया और पूछा कि तमिलनाडु में हुई घटनाओं को निर्वाचन आयोग के खिलाफ चलाए जा रहे व्यापक अभियान जितनी ही तबज्जो क्यों नहीं मिली। उनकी यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब राहुल गांधी और इंडिया गठबंधन के नेताओं ने दिल्ली में संसद से निर्वाचन आयोग तक मार्च निकाला।

सरकार पर दबाव बनाते रहेंगे विपक्ष का पीछे हटने से इनकार

» सीईसी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे पर अड़े इंडिया गठबंधन के नेता, दिल्ली सीईओ ऑफिस के बाहर कांग्रेस-आप का प्रदर्शन

» कश्मीरी गेट पर भारी पुलिस बल तैनात, खरगे के लंच पर पहुंचे विपक्ष के नेता

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस व अन्य विपक्षी दल चुनाव आयोग मामले में पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। इसी के तहत राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने राष्ट्रीय राजधानी में जनपथ पर एक हाई-लेवल मीटिंग बुलाई, जिसमें विपक्ष के कई बड़े नेता शामिल हुए। यह मीटिंग चुनावी मुद्दों को लेकर सत्ताधारी पक्ष और विपक्षी गठबंधन के बीच बड़े हुए राजनीतिक तनाव के माहौल में हो रही है। कांग्रेस अध्यक्ष और

राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने विपक्ष के सांसदों को लंच मीटिंग के लिए बुलाया है, जिसमें सांसद मुख्य चुनाव



संविधान और लोकतंत्र सबसे ऊपर : कांग्रेस

इससे पहले, कांग्रेस पार्टी ने एक आधिकारिक पोस्ट में कहा था, संविधान और लोकतंत्र सबसे ऊपर हैं। जब तक संविधान और लोकतंत्र को हर जन-विरोधी और राष्ट्र-विरोधी ताकत से पूरी तरह सुरक्षित नहीं कर लिया जाता, तब तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा। इंडिया गठबंधन इस मुद्दे पर चुनाव आयोग से जवाब मांग रहा है और उसने आयोग पर अपनी चिंताओं को दूर न कर पाने का आरोप लगाया है। विपक्ष का यह विरोध प्रदर्शन उनके बड़े लोकतंत्र बचाओ अभियान का हिस्सा था। गठबंधन की कई पार्टियों के नेताओं ने निर्वाचन सदन की ओर मार्च किया, लेकिन बैरिकेड्स लगाकर उन्हें रोक दिया गया।

आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार से मिलने का समय मांगने वाले एक पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे।

प्रमुख संस्थानों पर राजनीतिक दबाव में झुकने का आरोप लगाते हुए आरजेडी नेता ने आगे कहा कि आजादी से पहले भी राजा-महाराजा और ब्रिटिश वायसराय हुआ करते थे। वे अपनी मनमर्जी से शासन करते थे। यह देश

विरोध प्रदर्शन पूरे देश में फैल गए हैं और ये रुकेंगे नहीं : राजद

बातचीत से पहले पत्रकारों से बात करते हुए, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता सुधाकर सिंह ने कहा कि चल रहे विरोध प्रदर्शन पूरे देश में फैल गए हैं और ये रुकेंगे नहीं। सिंह ने कहा कि आज भी पूरे देश में ब्लॉक स्तर पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं, चाहे आप इसकी खबर दिखाएं या न दिखाएं। कल ये जिला स्तर पर होंगे। इसलिए यह विरोध जारी रहेगा, यह रुकेगा नहीं। यह एक लड़ाई है। लोकतंत्र सिर्फ चुनाव के लिए नहीं बनाया गया था, जिसमें कोई सांसद बन जाए, कोई प्रधानमंत्री बन जाए या कोई राष्ट्रपति बन जाए। भारतीय लोकतंत्र की स्थापना इसके लिए नहीं हुई थी।

आंदोलन को जनता का व्यापक समर्थन मिला : सीपीआई

विपक्ष के कैपेन की रफ्तार पर बात करते हुए, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया-सीपीआई के सांसद पी. संतोष कुमार ने जोर दिया कि इस आंदोलन को जनता का व्यापक समर्थन मिला है। सांसद ने कहा कि यह कोई नया आंदोलन नहीं है। इसकी शुरुआत 2025 में हुई थी। अब, एक या डेढ़ साल बाद क्या हुआ? यह पूरे देश का नारा बन गया है। कुमार ने आगे कहा कि यह पूरे देश का नारा बन गया है। यह पूरे देश का नारा बन गया है। मैं बस यही कह रहा हूँ। 6 अक्टूबर को इंडिया गठबंधन के नेताओं ने इलेक्शन कमीशन और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने के लिए निर्वाचन सदन तक मार्च किया। यह विरोध प्रदर्शन वोटर लिस्ट के स्पेशल इंट्रिंसिब रिविजन को लेकर किया गया था।

निजी मनमर्जी से नहीं चलेगा; यह देश संविधान के अनुसार चलेगा। संविधान का उल्लंघन हुआ है और बहुत महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्थानों ने अपने कर्तव्य से समझौता किया है। ठीक इसीलिए अब यह लड़ाई सड़कों पर लड़ी जाएगी।

चुनाव आयुक्त नियुक्ति कानून सुप्रीम चौखट की पर पहुंचा

सीजेआई के सामने पहुंची रिकॉल अर्जी, मुख्य न्यायाधीश बोले- देखेंगे

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को उस याचिका पर विचार करने की हामी भर दी, जिसमें मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) और चुनाव आयुक्तों (ईसी) की नियुक्ति से जुड़े 2023 के कानून पर आए हालिया बंटें हुए फैसले (स्प्लिट वर्डिक्ट) को वापस लेने की मांग की गई है। इस कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं को बड़ी संविधान पीठ के पास भेजा जाए या नहीं, इस सवाल पर 23 सितंबर को सुप्रीम कोर्ट के दो जजों की पीठ की राय अलग-अलग हो गई थी।

23 सितंबर को जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने इस सवाल पर

अलग-अलग राय दी थी कि 2023 के उस कानून की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं को बड़ी संविधान पीठ के पास

भेजा जाना चाहिए या नहीं। इस कानून में सीईसी और ईसी की नियुक्ति करने वाले पैलस से भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) को बाहर रखा गया है। पीठ ने कहा था कि दोनों जजों की राय अलग होने के कारण मामला सीजेआई सूर्यकांत के सामने प्रशासनिक पक्ष में रखा जाए, ताकि उचित संख्या वाली पीठ का गठन किया जा सके और इस मुद्दे पर प्रभावी तथा आधिकारिक फैसला हो सके।

बुधवार को सीजेआई और जस्टिस जॉयमाल्या बागची तथा जस्टिस वी. मोहना की पीठ के सामने वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकरनारायणन ने इस रिकॉल अर्जी का जिक्र किया।

उन्होंने अदालत को बताया कि वह हालिया फैसले को वापस लेने की मांग वाली अर्जी पर सुनवाई चाहते हैं। सीजेआई ने इस पर कहा, हम इसकी जांच करेंगे और फैसला लेंगे।



ज्ञानेश कुमार का इस्तीफा लेकर रहेंगे : सौरव दास

» पुलिस से मिले कॉकरोच जनता पार्टी के नेता

» 10 अक्टूबर को जंतर-मंतर पर होने वाले प्रदर्शन की जानकारी दी

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के नेता सौरव दास ने बताया कि पार्टी ने 10 अक्टूबर को जंतर-मंतर पर होने वाले प्रदर्शन को लेकर दिल्ली पुलिस को औपचारिक रूप से बता दिया है। उन्होंने बुधवार (7 अक्टूबर) को कहा कि इलेक्शन और वोटर लिस्ट से जुड़ी गड़बड़ी के मामलों को लेकर देश का युवा विरोध प्रदर्शन करेगा। सीजेपी लगातार मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग कर रही है।

सौरव दास ने कहा कि मैं पार्लियामेंट स्ट्रीट थाने जाकर एक औपचारिक लेटर देकर आया हूँ, जिसमें पुलिस को जानकारी दी गई कि सीजेपी और देशभर के युवा 10 अक्टूबर को जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के लिए जुटेंगे। उन्होंने कहा, हमने उनसे कानून-व्यवस्था बनाए रखने, हमारा सहयोग करने और ट्रैफिक की जरूरी व्यवस्था करने का अनुरोध किया है। हमने इसकी लिखित सूचना



दे दी है। सौरव दास ने कहा, हमने औपचारिक पत्र जमा कर दिया है और दिल्ली पुलिस से इसकी रिसीविंग भी मिल गई है। बातचीत के आधार पर उन्होंने हमसे एक अंडरटेकिंग ली और हमने इसके लिए सभी प्रक्रियाएं पूरी कर ली हैं। हमें उम्मीद है कि दिल्ली पुलिस हमारा सहयोग करेगी। सौरव दास ने कहा कि देश का युवा वोट चोरी और चुनावों में चल रही धांधली को लेकर चिंतित है। सीजेपी के फाउंडर अभिजीत दीपके ने भी कहा था कि अगर ज्ञानेश कुमार इस्तीफा नहीं देते हैं तो सीजेपी 10 अक्टूबर को प्रोटेस्ट करेगी। अहम बात यह भी है कि सीजेपी इसको लेकर तैयारी भी कर चुकी है। कॉकरोच जनता पार्टी ने देश के युवाओं से इस प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की है।

जन सुराज का दामन थामेंगे अनंत सिंह

4पीएम न्यूज नेटवर्क

पटना। बिहार की आठ सीटों पर होने वाले एमएलसी चुनाव में हैरान करने वाली बात है कि जेडीयू के विधायक अनंत सिंह जन सुराज के लिए प्रचार कर रहे हैं। जन सुराज के प्रत्याशी डॉ. अनुज सिंह पटना स्नातक सीट से उम्मीदवार हैं।

इनकी जीत के लिए अनंत सिंह ने पूरी ताकत झोंक दी है। सवाल है कि क्या अनंत सिंह जन सुराज में शामिल होंगे? इस पर प्रशांत किशोर का बयान आया है। अनंत सिंह के जन सुराज में आने की चर्चा पर प्रशांत किशोर ने कहा कि विचारधारा के साथ पार्टी चलती है और जो लोग विचार के साथ उनकी पार्टी में आ रहे हैं, उनका स्वागत है।

अभिनेता राजपाल यादव को सुप्रीमकोर्ट से लगा झटका

» कोर्ट से राहत नहीं, जमा करने होंगे दो करोड़

» सीजेआई बोले- आपका पैसा भी अता पता लापता

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को अभिनेता राजपाल यादव को निर्देश दिया है कि वह चेक बाउंस मामले में शिकायतकर्ता को देय रकम में से 2 करोड़ रुपये 13 अक्टूबर तक जमा करें। कोर्ट ने साफ कहा कि रकम जमा किए जाने के बाद ही वह हाईकोर्ट के आदेश के खिलाफ राजपाल यादव की याचिका पर विचार करेगा।

राजपाल यादव आज खुद कोर्ट में मौजूद थे और अपने साथ 1.15 करोड़ रुपये का डिमांड



ड्राफ्ट लेकर पहुंचे थे। बाकी 85 लाख रुपये 13 अक्टूबर तक उनकी संपत्ति के खरीदार के जरिए जमा किए जाने हैं, जो राजपाल के साथ कोर्ट में मौजूद था। सुप्रीम कोर्ट ने राजपाल यादव के रवैये पर कड़ी नाराजगी जताई और चेतावनी दी कि उनकी सजा बढ़ाई भी जा सकती है। कोर्ट ने कहा कि अब तक जो बार-बार मोहलत दी गई, उसका मकसद सिर्फ यही था कि शिकायतकर्ता को उसका पैसा मिल सके। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने टिप्पणी की, कानून का इस तरह इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। कोर्ट ने साफ किया कि रकम जमा कराने का आदेश इसलिए दिया गया है ताकि

छात्र देश-विरोधी नहीं, भरोसा जीते सरकार: बाम्बे हाईकोर्ट

» पुणे प्रोटेस्ट पर अदालत की बड़ी टिप्पणी

4पीएम न्यूज नेटवर्क

मुंबई। बॉम्बे हाई कोर्ट ने बुधवार को कहा कि अगर महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भर्ती प्रक्रिया को लेकर कोई गड़बड़ी है, तो प्रदर्शनकारियों को विरोध करने का अधिकार है और सरकार को उनका भरोसा फिर से जीतना चाहिए।

कोर्ट ने कहा कि प्रदर्शनकारियों की शिकायतें गंभीर हैं, साथ ही उसने छात्रों से क्लास में लौटने को भी कहा। कोर्ट ने

सरकार को निर्देश दिया कि वह तीन हफ्ते के अंदर एक हलफनामा दाखिल करे, जिसमें लगभग 70,000 खाली पदों का विभाग और आरक्षण के हिसाब से ब्योरा दिया गया हो। चीफ जस्टिस महेश चंद्र त्रिपाठी और जस्टिस अद्वैत सेठना की बेंच ने कहा कि वे छात्र हैं, देश-विरोधी नहीं।

यह बेंच पुणे के रहने वाले अमित सुपेकर की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें अधिकारियों को प्रदर्शनकारियों के लिए तय जगह उपलब्ध कराने का निर्देश देने की मांग की गई थी।

शिकायतकर्ता के पैसे की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। हालांकि, अदालत ने कहा कि राजपाल यादव का अब तक का आचरण उसे संतुष्ट नहीं करता। आदेश पारित करने के बाद पीठ और राजपाल यादव के बीच कुछ हल्की-फुल्की बातचीत भी हुई।

राजपाल ने अपनी फिल्म 'अता पता लापता' से हुए आर्थिक नुकसान का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि फिल्म की वजह से उन्हें करीब 200 से 250 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ और फिल्म के निर्माता भी घाटे में रहे। इसी दौरान सीजेआई ने मजाकिया अंदाज में फिल्म के नाम को राजपाल यादव के मौजूदा हालात से जोड़ दिया। उन्होंने कहा आपकी फिल्म की तरह आपका पैसा भी अता पता लापता है, गायब। अदालत की इस टिप्पणी पर माहौल कुछ हल्का हो गया।